बहुत कम उम्र की किशोरावस्था लड़कियों के साथ, और उनके लिए, प्रोग्रामिंग

EMpower

परिचय

इस काम को बेहतर बनाने में बहुतों का योगदान रहा है, जिनमें शामिल हैं :

- किशोर लड़कियों, किशोर लड़कियों के साथ किये जाने वाले प्रोग्राम के लीडर, कार्यकर्ता, और कई और जवान लोग और रीसर्चर्स । इन अलग अलग लोगों के दृष्टिकोण को समझ कर, हम बहुत कम उम्र की किशोर लड़कियों के रोज़मर्रा के जीवन को, और विस्तृत नज़रिये से देख पाए । साथ साथ हम उन संस्थाओं के बारे में भी कुछ समझ पाए, जो इन लड़कियों के साथ काम कर रही हैं । लड़कियों को सार्थक तरीके से साथ ले कर चलने और उनकी मदद करने में कई चुनौतियाँ आती हैं, कई मौके भी मिलते हैं -इनके बारे में हमारी समझ बढ़ी । किशोरावस्था की चौखट पर खड़ी लड़कियों के आज और आने वाले कल से अगर कोई उम्मीद बांधे, उस भविष्य के लिए संसाधन जोड़े, तो इससे उन्हें बहुत फायदा होता है और बहुत प्रोत्साहन भी मिलता है । जवानी के इस मोड़ पर लड़कियों को अपने वर्तमान और भविष्य को समझने की ज़रुरत होती है और हमें उम्मीद है कि हमारी ये रिपोर्ट एक मानचित्र बनाएगी, ऐसे रस्ते दिखाएगी जिनके द्वारा इन लड़कियों के आज और कल से हम बेहतर तरीकों से जुड़ सकें ।

जेनिफर काटिनो और एमिली बटिस्टिनी इस विस्तृत काम की मुख्य रीसर्चर्स और लेखक रही हैं । ये काम एक सोच से शुरू हुआ । फिर वो ज़मीनी स्तर पे होते हुए काम से जुड़ कर, नई सीख लेकर, विस्तृत होता चला गया । इस प्रयास के कुशल मार्गदर्शन के लिए हम उनके आभारी हैं ।

सिंथिया स्टील ने इस काम की ख़ास ज़रुरत को समझा और उसकी संकल्पना की । उन्होंने इस रिपोर्ट को भी शक्ल दी । इस काम के चलते, क्रिस्टन वूल्फ और निशा धवन का बहुत योगदान रहा । घाना और इंडिया में इन दोनों ने लड़कियों को साथ जोड़कर रिसर्च क्रियाओं की पहल की और उनमें शामिल भी हुईं । ली कोलालुका ने अपनी सम्पादकीय परख से इस काम को बेहतर बनाया । और साथ ही, उन वेंडर्स को मैनेज किया, जो इस काम के आखरी चरण में इस पर काम कर रहे थे । जेलान ज़यन को, कॉपी एडिटिंग और प्रूफिंग का काम करने के लिए शुक्रिया, और अलाइक क्रिएटिव के स्टीव टियरने को डिज़ाइन और लेआउट के लिए ।

EMpower (इस संस्था के नाम को हम आगे, इस रिपोर्ट में, 'एम्पावर' के रूप में लिख रहे हैं), की ऐसे कई अनुदेयी, यानी कि ग्राँटी पार्टनर संस्थाएं हैं, जिन्होंने एक सर्वे के लिए अपना कीमती समय दिया, अपनी जानकारी साझा की, इंटरव्यू दिये और फिर मेक्सिको में इस विषय पर एक लर्निंग एक्सचेंज में भी हिस्सा लिया । ये सारा काम हमारे सहकार्य को (जो कि जारी है), और प्रभावी बनाएगा । हम ऐसे प्रोग्राम बना पाएंगे जो अलग अलग परिस्तिथियों में लड़कियों को साथ जोड़ें, लड़कियों के लिए सुरक्षित हों और नए मौकों से भरपूर हों । ऐसे कार्यक्रम, जो बहुत छोटी उम्र की किशोर लड़कियों को ख़ास मदद दें, उन सालों में, जब वो किशोरावस्था से बालिग़ होने की ओर बढ़ें ।

ग्लोबल स्तर पर रिसर्च और कार्यक्रम करने वाले हमारे सहकर्मियों को भी शुक्रिया, उन्होंने ठोस प्रमाणों से साथ अपने तजुर्बे साझा किये । इस चरण से गुज़रती हुई लड़कियों की ज़रूरतों को समझने में और उनके अनुकूल प्रोग्राम बनाने के लिए उन्होंने जो व्यवहारिक समझ बूझ साझा की , उससे हमें बहुत मदद मिली ।
एक ख़ास ज़िक्र नोवो फाउंडेशन का, जिन्होंने इस काम को फंड किया, खासकर पैमेला शिफमेन, जोडी मायरम और रमतू बांगुरा के नेतृत्व, दूरदर्शिता और उनके साथ और एकजुटता के लिए ।

अंत में, ये काम किशोर लड़कियों को समर्पित है । उनको, जो उन संस्थाओं से जुडी हैं जिन्हें एम्पावरने सपोर्ट दिया है, और उन्हें भी, जो इन संस्थाओं के बाहर हैं : आप से हमें बढ़ावा और प्रेरणा मिलती है की हम आप को साथ ले कर, आप के लिए और बेहतर काम करें और हमेशा आपका साथ रहे ।

विषय-सूची

कार्यकारी सारांश ४
कम उम्र की किशोरावस्था: लड़कियों के लिए एक बुनियादी समय कार्य-प्रणाली पर एक संक्षिप्त नोट ६
रिसर्च से जो पता चला ७
८

सफलता के लिए वी.वाई.ए. लड़कियों का खुद सार्थक रूप से जुड़ना ज़रूरी है ११

वी.वाई.ए. लड़कियों तक पहुंचने के लिए परिवारों और समुदायों के साथ साझेदारी करना ज़रूरी है, भले ये आसान न हो। १५

प्रोग्राम बनाने के तरीके ऐसे होने चाहियें, जो बदलाव की संभावना लेके चलें और लड़कियों की बदलती ज़रूरतों और रूचियों को ध्यान में रखें। १९

जान समझ के लड़किओं की सुरक्षा के लिए कदम उठाना, प्रोग्राम के सफल होने के लिए ऐकदम ज़रूरी है। २३

स्थानीय और ग्लोबल स्तर पर हो रहे वी.वाई.ए. कोशिश अगर आपस में गहरे सम्बन्ध बनाएं, तो वी.वाई.ए. लड़कियों के लिए हो रहे प्रोग्राम और रिसर्च, दोनों ही गतिशील होंगे। २५

सारांश में २७
एनेक्स-इस काम में इस्तेमाल किये गए तरीक २८
एनेक्स - चुने हुए संदर्भ ३१

कार्यकारी सारांश

१० और १४ वर्ष की आयु के बीच की लड़कियां (१.) जीवन के एक उतार-चढ़ाव वाले दौर से गुज़र रही होती हैं । किशोरावस्था अपने साथ शारीरिक और भावनात्मक परिवर्तन लेकर आती है; इस दौरान समाज का उनकी तरफ देखने का रवैया भी बदलता है । जो लड़कियां गरीबी में रहती हैं या जिनको एक मार्गदर्शन करने वाला वातावरण नहीं मिलता, उनके लिए, ये बदलाव और भी बेचैनी या अस्थिरता पैदा कर सकते हैं ।

हम में से जो समाज के अधिकारों और सुविधाओं से वंचित वर्ग की लड़कियों को सशक्त बनाने के लिए काम कर रहे हैं, उनको लड़कियों के जीवन के इस चरण की बेहतर समझ होनी चाहिये, जिससे
वह लड़कियों को सही मायने में अपना सहयोग दे सकें । बहुत कम उम्र की किशोरावस्था (वी.वाई.ए.) वाली लडकियां, जो बचपन के स्वास्थ के जोखिमों से बच निकली हैं, उन्हें "सुरक्षित" कहा जा सकता है । वे अब किशोरावस्था के जाने माने उतार-चढ़ाव भरे जीवन की शुरूआत करने वाली हैं। वी.वाई.ए. (अंग्रेज़ी में, 'वैरी यंग एडोलसेंट' - यानी जो किशोरावस्था के शुरुवाती सालों में हैं) लड़कियां इस समय में जानकारी, कौशल, दृष्टिकोण और अपनी समझ विकसित करती हैं । और ये सब भविष्य में उन्हें खुशहाल होने में काम आता है । यानी किशोरावस्था के शुरुआती साल बहुत महत्त्व रखते हैं । और इस लिए, किशोरावस्था के शुरुआती साल, ज़रूरी रोकथाम करने के लिए, हमें एक महत्वपूर्ण मौका देते हैं ।

पिछले एक दशक से मोटे तौर पर किशोर लड़कियों के साथ काम करने पे और ध्यान दिया जाने लगा है । इसके बारे में जो लिखा गया है, उस सब से पता चलता है कि अधिकांश कार्यक्रम १४ - १९ वर्ष की लड़कियों को ध्यान में रखते हुए बनाये गए हैं। इस विश्वास के साथ, कि लड़कियों के जीवन में कम उम्र से ही ध्यान देने से बेहतर, और परिवर्तन लाने वाले परिणाम सामने आएंगे । एम्पावर(EMpower) ने इस विषय पर और सीखने का निश्चय किया है ताकि हम बेहतर काम कर सकें ।

हम ये समझते हैं कि VYA / वी.वाई.ए. (कम उम्र की किशोरावस्था) लड़कियों के लिए कार्यक्रम और योजनाएं उनके जीवन पर एक अच्छा और प्रभावशाली असर छोड़ेंगी । जीवन के इस नाज़ुक चरण के दौरान जानकारी, संसाधन और लक्ष्य, इन सबको ध्यान में रखकर सहायता देना बहुत लाभकारी होता है । इससे लड़कियों को अपने और अपने जीवन के बारे में एक सही दृष्टिकोण बनाने में मदद मिलती है । और उनकी जीवन को अच्छे से जीने की समझ भी बढ़ती है ।

इस में कोई दो राय नहीं कि एक १० -वर्षीय लड़की, एक १६ -वर्षीय लड़की से काफी अलग होती है। फिर भी, दुनिया भर की रिसर्च और हमारी अपनी प्रचलित योजनाओं पर गौर करने से ये पता चलता है कि वी.वाई.ए. लड़कियों के लिए ख़ास कार्यक्रम बनाना, उनमें रुचि लेना और उन्हें साधन दिलाने पर ज्यादा और निरंतर ध्यान देना, कितने ज़रूरी हैं। बात को और गहराई से समझने के लिए, एम्पावर ने स्वतंत्र रीसर्च सलाहकारों के साथ काम करके यह समझ हासिल करी, कि मोटे तौर पर, वर्तमान कार्यक्रम के कौन से पहलू फ़ायदेमंद रहे हैं । और साथ ही, चार अलग-अलग भौगोलिक क्षेत्रों में हमने अपने सहयोगियों के काम की स्पष्ट समझ भी हासिल करी। एक व्यापक समझ के लिए, हम ने विवरणिकायों की समीक्षा करी, सारे कार्यक्रमों की जानकारी ली, और एम्पावर अनुदानों का सर्वेक्षण किया । साथ ही विश्व भर के, इन मामलों पे जानकार प्रोफेशनल के साथ बातचीत करी। लड़कियों के साथ मिलकर जो कार्यक्रम होते हैं, उनकी समझ इकठ्ठा करी । इस सब से यही पता चला कि विशेष रूप से वी.वाई.ए. लड़कियों के साथ मिल कर, उनके लिए बनाये गये कार्यक्रम, अनुमान से कहीं ज़्यादा प्रभावशाली और सार्थक साबित हुए हैं ।

दुनिया भर में वी.वाई.ए. लड़कियों के कुछ मुद्दे और दृष्टिकोण मिलते जुलते हैं । लेकिन उनके लिए जो प्रोग्राम बनते हैं, वह उस जगह की स्थानीय वास्तविकताओं - जैसे कोई ख़ास सामाजिक, सांस्कृतिक, स्वास्थ्य या आर्थिक चुनौती - को ध्यान में रखते हुए बनते हैं...ऐसी ख़ास लोकल बातें, जिनका सामना लड़कियों को रोज़ाना करना पड़ता है । कुछ लड़कियों को जल्दी शादी की संभावना का सामना करना पड़ता है, कुछ हिंसा से घिरे क्षेत्रों में रहती हैं, और कुछ एच.आई.वी. के साथ जी रही हैं और पाती हैं कि समाज उन्हें ऐसे में दरकिनारे कर देता है । लोगों और समुदायों में बहुत विवधता होती है, और उसी तरह दिक्कतों और उनके समाधानों में भी । हालाँकि, इस परियोजना में एकत्रित डेटा की जांच करने के बाद छह प्रमुख निष्कर्ष हमारे सामने आये हैं:

[१ .] स्थानीय संस्थाएं वी.वाई.ए. लड़कियों के साथ, पहले से कहीं ज्यादा, प्रगतिशील-पुराने तरीकों से अलग और लक्षय को ध्यान में रखते हुए काम कर रही हैं ।

तो आज की तारीख में, स्थानीय संस्थाओं को वी.वाई.ए. के कार्यक्रमों का मानदंड या बेंचमार्क माना जाएगा। स्थानीय संस्थाएं जो कार्यक्रम कराती हैं, उनमें इन दोनों बातों की एक गहरी झलक दिखती है: अपने समुदाय की लड़कियों को कैसे सपोर्ट दिया जाए, उन्हें कैसे सशक्त किया जाए। इन कार्यक्रमों ने छोटी लड़कियों तक पहुँचने की और ज़्यादा कोशिश की है, और समय के साथ इन कार्यक्रमों के सारे भाग एकीकृत भी हो गए हैं ।

[२.] हमारी सफलता की नीव है, YVA की लड़कियों को सार्थक तरीकों से कार्यक्रमों से जोड़ना।

जो कार्यक्रम सबसे ज़्यादा सफल रहे हैं, वो लड़कियों को प्रोग्राम साइकिल के हर पहलू से जोड़ते हैं। डिज़ाइन से लेकर डिलीवरी तक ; हर चीज़ की उपयोगिता पर निर्णय लेने के दौरान; इस पे फैसला करते हुए कि हर काम किस पैमाने पे किया जाए। हाँ, लडकियां किस लेवल पर जुड़ेंगी, किस तरह से जुड़ेंगी, इसमें फर्क आते रहते हैं । अलग अलग नीतियां अपनाई जा रही हैं। जैसे : संस्था को लेकर निर्णय लेने की प्रक्रिया से लड़कियों को जोड़ना; प्रोग्राम को डिज़ाइन करने, उसको अमल करने में भी उन्हें जोड़ना ; और रिसर्च की प्रक्रिया में उन्हें सहभागी बनाना... लड़कियों को आधार बनाकर निर्णय लेने के लिए, और एक प्रतिक्रियाशील प्रोग्राम बनाने के लिए ,ये कोशिशें एकदम आवश्यक हैं ।

फुटनोट (पृष्ट ४)::

1. हम उसे लड़की मानते हैं जिसकी उम्र १०-१९ के बीच की है और जो अपनी जेंडर की पहचान लड़की के रूप में करती है । हम मानते हैं कि हमारा ये तरीका बड़ी सारी जटिलताओं को नज़रअंदाज़ सा कर रहा है: खासकर आज के समय में, जब कई सारे जवान लोग अपनी पहचान को लेकर एक लम्बी खोज पर निकले हैं । हमें ये भी समझ में आ रहा है कि जिन लोगों को उनके अधिकारों से वंचित रखा गया है, उनके लिए समाज के मानकों और आर्थिक अपेक्षाओं का सामना करते हुए, अपनी मर्ज़ी से अपनी जेंडर पहचान को अपनाना कितना मुश्किल होता है ।

[३.] परिवारों और समुदायों को साथ जोड़ना ही होगा, भले ही ये आसान न हो ।

वी.वाई.ए. लड़कियों तक पहुँचने के लिए, ये ज़रूरी है कि प्रोग्राम उनके परिवार और समुदाय के साथ ऐसे रिश्ते बनाएं, जिनपे
वो भरोसा कर पाएं । परिवारों का संग जुड़ना, नुक्कड़ नाटक, परिवारीक मौज मस्ती का दिन, स्वास्थ मेला और स्कूल में प्रस्तुतियों के ज़रिये किया जा सकता है; या ऐसी प्रोग्रामिंग
के ज़रिये जो ख़ास परिवारों और समुदाय के सदस्यों के लिए बनी हो; या जो किसी एक जन के घर जा कर, उससे मिलने पर ख़ास आधारित हो। ऐसे संपर्क बनाये रखने के लिए लगातार कोशिश करनी पड़ती है, पर इससे ये फायदा होता है कि प्रोग्राम पहले से बहुत प्रभावशाली हो जाता है ।

[४ .] प्रोग्राम बनाने के तरीके गतिशील होने चाहिए। प्रोग्राम, बदलती परिस्थितियों और लड़कियों के हित को ध्यान में रखते हुए बनने चाहिए।

वी.वाई.ए. प्रोग्रामों में कुछ ऐसे तत्व होने चाहिए, जो हर प्रोग्राम में पाए जाएँ। किशोरावस्था मानसिक, शारीरिक बदलाव मासिक धर्म/ पीरियड को लेकर साफ़ सफाई , इन सबकी जानकारी होनी चाहिए । अपने शरीर पर हर तरह से अपना हक़, जिसका अपनी मर्ज़ी के बिना, किसी भी तरह से उलंघन नहीं हो सके.. ये बातें हर प्रोग्राम में शामिल होनी ही चाहियें । साथ साथ ये भी सच है कि सबसे प्रभावशाली प्रोग्राम वो रहे हैं, हो किसी ख़ास सन्दर्भ को ध्यान में रखकर बनाये गए हैं। ऐसे प्रोग्राम, जो लड़कियों की बदलती ज़रूरतें, रुझान और काबिलियत को देखकर बनाये गए हैं। कभी कभी ऐसा कर पाने के लिए, अलग अलग उम्रों की ज़रूरतों को ध्यान में रख कर प्रोग्राम बनाने होते हैं। कभी कभी इसका मतलब होता है कि रचनात्मक तरीकों से लड़कों को भी शामिल कराया जाए।

[५ .] प्रोग्राम की सफलता, लड़कियों की सुरक्षा पर सोच समझ कर ढूंढें गए, असरदार तरीकों पर निर्भर है ।

सफल प्रोग्राम वो होता है जो भाग लेनी वाली लड़कियों की सुरक्षा और सिक्योरिटी को सुनिश्चित करता है। और नैतिक हैं। अक्सर, जो संस्थाएं वी.वाई.ए. के संग काम करती हैं, वो खुद बच्चों की सुरक्षा को लेकर, स्पष्ट पॉलिसी बनाती हैं, जिन्हें अमल करने के किये वो ख़ास तरीकों को भी अपनाती हैं ।

[६ .] वी.वाई.ए. के एकदम ज़मीनी स्तर के काम को अगर, इस काम में की जा रहीं ग्लोबल कोशिशों से
मज़बूत तरीकों से जोड़ा जाए, तो इससे वी.वाई.ए. लड़कियों की प्रोग्रामिंग और रिसर्च, दोनों को बढ़ावा मिलेगा।

एकदम लोकल प्रोग्राम को बहुत बड़े पैमाने पर करना - या किसी एक सन्दर्भ के लिए बने हुए प्रोग्राम को कहीं और ले जा कर अमल करना- ये दोनों मुश्किल काम हैं । कुछ संस्थाएं अपने प्रोग्राम्स को नई जगहों पर ले जाने के लिए, पाथवे प्रोग्राम
(जिनमें आपको नए सन्दर्भ के लिए कुछ अतिरिक्त ट्रेनिंग दी जाती है) और पीयर टू पीयर लीडरशिप ट्रेनिंग (जिसमें भाग लेने वालों के बीच समानता की इज़्ज़त की जाती है, जिससे संचार में आसानी आती है), इन दोनों तरीकों पर गौर कर रही हैं । पर प्रकट रूप से ये दिखा पाना कि ये सब हुआ है, अब भी मुश्किल है। आगे बढ़ने के लिए ये बहुत ज़रूरी है कि इन संस्थाओं की मॉनिटर करने, और मूल्यांकन करने की क्षमताओं को बढ़ावा मिले। ग्लोबल और लोकल, दोनों किस्म की संस्थाओं को रिसर्च और व्यवहारिक काम के एक साथ चालू रहने से फायदा होगा । भूगोल के दक्षिणी और उत्तरीय प्रांतों के साथ काम करने से YVA सम्बन्धी ज्ञान का प्रवाह होगा। साथ साथ हमें ऐसे साधन मिलेंगे जिनसे YVA के साथ किया जाने वाला काम, और गहरा और विस्तृत प्रभाव कर पाएगा ।

अगला कदम क्या हो ?

प्रोजेक्ट पर रिसर्च के निष्कर्षों के अनुसार, वी.वाई.ए. की प्रोग्रामिंग, अभ्यास और रिसर्च, इन तीनों को गतिशील करने के लिए, पांच ठोस कदम लेने होंगे । इनसे ये बेहतर और व्यापक रूप से अपनाये जाएंगे, किये गए काम के सबूत बन पाएंगे, पढ़ाई और सूचना का आदान प्रदान होगा, और आवश्यक संसाधन ज़्यादा लोगों तक पहुँच पाएंगे ।

ज़मीनी स्तर पर काम करने वाली संस्थाओं को उनकी ज़रुरत की आर्थिक सहायता, ज़रुरत का सामान और तकनीकी सुविधाएं प्रदान की जाएँ । इससे वो अपने काम को कायम रख पाएंगे, वो कैसे चल रहा है, उसका सही अंदाज़ लगा पाएंगे, और अपने काम को और बड़े पैमाने पर कर पाएंगे

। ये एकदम ज़रूरी है कि ये सहारा लम्बे अरसे तक मिले, और संस्था की मौजूदा परिस्तिथियों को ध्यान में रखकर अपने आपको ढाले । जो लोग ऐसे कामों में जुटे हुए हैं, उन्हें आपसी संपर्क में लाया जाए ।

वो चाहे एक ही क्षेत्र में काम करते हों या फिर अलग अलग प्रांतों में हों । काम के आधार पर नयी बिरादरी बनाई जाएँ, जिनमें ग्लोबल नार्थ और ग्लोबल साउथ एक दूसरे से साझा कर सकें, आपसी आदान प्रदान कर सकें और परेशानियों को साथ सुलझा सकें ।

रिसर्च प्रणाली और कार्य प्रणाली, इन दो पहलू पर काम के बीच सामंजस्य बनाना, इनमें सहयोग लाना, ताकि ज़मीन पे काम करने वाली संस्थाएं अपने प्रोग्राम और उससे जुड़ी सामर्थ्य को और मजबूत बना सकें ।

ऐसे मंच तैयार करे जाएँ जहां वो स्थानीय संस्थाएं, जो लोगों से जुड़ कर काम करती हैं, वो अपने तजुर्बे और अपने हुनर को साझा कर सकें

जब लड़कियों को कार्यक्रम का आधार बनाया जाता है, तो कुछ चुनौतियां बार बार सामने आती हैं । ऐसे मंच बनने से, ये स्थानीय संस्थाएं दूसरों को इन चुनौतियों के जूझने में मदद करेंगी ।

वी.वाई.ए. लड़कियों पे ज़्यादा ध्यान देना और उनके संसाधनों को बढ़ाना- इन बातों के साथ साथ, लड़कियों के साथ किये काम को और गतिशील बनाना, उसका प्रचार करना, उसकी पहुँच को बढ़ाना । नए प्रयोग करती हुई उन्नत प्रोग्रामिंग को बढ़ावा देना । और लम्बे अर्से तक, और सन्दर्भ को समझ के दिए गए अनुदानों के असर को दिखा पाना ।

कम उम्र की किशोरावस्था: लड़कियों के लिए एक बुनियादी समय

प्रारंभिक किशोरावस्था के शुरू के सालों में बड़ी तेज़ी से परिवर्तन आते हैं: यह समय हॉर्मोन सम्बन्धी उतार-चढ़ाव, शारीरिक बदलाव और भावनात्मक उथल-पुथल से भरा होता है। किशोरावस्था की शुरुआत एक ऐसा समय है जब अपनी पहचान, अपने मूल्य - क्या सही और क्या गलत वगेहरा, एक आकार लेने लगते हैं।। और इस दौरान, अपने व्यक्तित्व की पहचान बनाने की इच्छा और साथ ही अपने मित्र समूह या समाज के साथ जुड़े रहने की जरूरत के बीच एक टकराव भी होता है। ज्यादातर लड़कियों के लिए, यह एक ऐसा समय है जब उनका जीवन पारंपरिक तौर तरीकों से बांध जाता है और जीवन के अवसर सीमित हो जाते हैं।

लड़कियों के जीवन का यह चुनौती भरा समय नज़रअंदाज़ कर दिया जाता है। जबकि इस समय अगर उन पर ध्यान दिया जाए, तो उनके जीवन में एक लम्बे समय तक रहनेवाला, परिवर्तनकारी प्रभाव यहां से शुरू हो सकता है। अगर हम शुरुआती किशोरावस्था में लड़कियों पर समय और ध्यान लगाएं, उन्हें सही जानकारी दें, उनकी योग्यता को उभारें, तो हम उनके तेज़ी से बदलते जीवन में उनको सहारा दे पाएंगे। जिससे वह अपने जीवन में अपनी पूरी क्षमता और अनोखे कौशल का अनुभव कर पाएंगी।

एम्पावर दुनिया भर में समाज के अधिकारों और सुविधाओं से वंचित वर्ग के युवाओं, खासकर लड़कियों, को सशक्त बनाने के लिए काम करता है। एम्पावर संगठन इन दिनों एक आंकड़ा एकत्रित कर रहा है, जिससे यह पता लग सके, कि कम उम्र की किशोर (वी.वाई.ए.) लड़कियों के लिए जो परोपकारी योजना सम्बन्धी, पढ़ाई सम्बन्धी और प्रोग्राम सम्बन्धी इन्वेस्टमेंट हुए हैं, उनकी क्या स्थिति है । कि लड़कियों के इस चरण के दौरान सहायता करने के लिए क्या- क्या किया जा रहा है और लड़कियों के लिए बनाये जा रहे प्रोग्रामों में हमारी समझ और जानकारी, किस हद तक इस्तेमाल की जा रही है।

एम्पावर इस काम को एक महत्वपूर्ण पहल के रूप में देखता है, जो वी.वाई.ए. लड़कियों और उनको सहायता करने वाले संगठनों को और आर्थिक साधन दिलाने और लड़कियों के अनुरूप सफल प्रोग्रामिंग बनाने के काम को दिशा देगा। जब एम्पावर ने इस रिसर्च को शुरू किया, तो ये माना जाता था कि वी.वाई.ए. लड़कियों के लिए प्रोग्रामिंग में सीमित जानकारी इस्तेमाल की जाती है। लेकिन, प्रोजेक्ट टीम की जाँच पड़ताल ने कई ऐसे निष्कर्ष सामने रखे जो बहुत रोचक थे और जिनके बारे में हमने पहले सोचा न था । वी.वाई.ए. लड़कियों के लिए की जा रही प्रोग्रामिंग और इस विषय में रिसर्च, दुनिया भर में बढ़ रही है। कई स्थानीय/ ज़मीनी स्तर पे काम करने वाले संगठन वी.वाई.ए. लड़कियों के साथ मूल्यवान और लाभदायक काम कर रहे हैं। ज़्यादातर स्थानीय तौर पर जो काम हुए हैं, वे स्थिति के अनुरूप अपने को ढाल के, कई दृष्टिकोण को ध्यान में रखते हुए और बहु-क्षेत्रीय प्रोग्रामिंग के रूप में विकसित हुए हैं। ऐसी प्रोग्रामिंग लड़कियों की खुशहाली को अपना आधार बनाती है जिससे वो वी.वाई.ए. लड़कियों और उनके समुदायों की बदलती हुई ज़रूरतों को सम्बोधित कर पाती है ।

एक लड़की का दृ टिकोण: “मेरी पहली माहवारी १ ० साल की उमर में हुई । म इस के बारे में कुछ भी नहीं जानती थी। मैंने अपनी मममी को भी नहीं बताया। मैं बहुत डरी हुई थी। मुझे लगा कि मैं बीमार हूँ, और मैं बहुत दुखी हुई। मैंने भावनातमक बदलावों का अनुभव किया। मैं बड़े होने से घबरा रही थी और बचपन को नहीं छोड़ना चाहती थी।” - किशोर लड़की, मैकिसको

कार्य-प्रणाली पर एक संक्षिप्त नोट

इस रिसर्च के लिए, एम्पावर ने स्वतंत्र सलाहकारों की एक छोटी टीम के साथ मिलकर काम किया। प्रोजेक्ट टीम ने व्यापक रूप से जो भी लिखित मटेरियल था, उसकी समीक्षा की और कार्यक्रमों को समझा; एम्पावर के अनुदेयिओं के साथ एक ऑनलाइन सर्वेक्षण करा; इस विषय के प्रमुख जानकारों, विश्व के अनुभवी पेशेवरों और इस फील्ड में रिसर्च करने वालों का इंटरव्यू लिया; दक्षिण अमेरिकी कार्यक्रम चालकों और कार्यक्रमों में भाग लेने वाली लड़कियों के साथ एक आमने-सामने वाली वर्कशॉप करी; और वी.वाई.ए. और बड़ी उम्र की किशोरावस्था वाली लड़कियों, दोनों के साथ सहभागी प्रयोग करे ।

लिखित सामग्री की जांच - जो जून से सितंबर २०१८ तक की गई और अप्रैल २०२० में अपडेट की गई - उसमें १२३ लेखों को विशेषज्ञ द्वारा स्वीकृत और ५० लेखों को अन्य रिपोर्ट (ग्रे लिटरेचर) के रूप में वर्गीकृत किया गया। रिसर्च ने दुनिया के अनेक कार्यक्रमों को समझ कर, ५० से अधिक कार्यक्रमों को उपयुक्त मान के चुना। प्रोजेक्ट टीम ने उस काम की ख़ास जानकारी पाने की कोशिश की, जो एम्पावर के अनुदेयिओं ने वी.वाई.ए. की चुनी हुई आबादियों के साथ किया है । इस जानकारी के लिए परियोजना टीम ने सितंबर २०१८ में सक्रिय एम्पावर अनुदेयिओं के साथ एक ऑनलाइन सर्वेक्षण भी किया। इस सर्वेक्षण में कुल ७१ ने उत्तर दिया, यानी जिन -जिन से ये सवाल पूछे गए, उन में से कुछ ९३% ने जवाब दिया ।

ये सारी समझ और जानकारी को और भी उपयुक्त बनाने के लिए , रिसर्च करने वालों ने फील्ड पर काम कर रहे २० प्रमुख जानकारों और अनुभवी पेशेवरों के इंटरव्यू लिए। इनमें से १ ०

इंटरव्यू एम्पावर(ईएमपावर) के सक्रिय अनुदान भागीदारों के साथ थे, ६ अन्य गैर-सरकारी संगठनों (एन.जी.ओ.) के कार्यक्रम पेशेवरों के साथ थे, और ४ ऐसे जाने पहचाने शोधकर्ताओं
के साथ थे जिनका काम वी.वाई.ए. लड़कियों पर केंद्रित है। दक्षिण अमेरिकी में की गयी, मार्च २०१९ में एक वर्कशॉप के साथ, परियोजना के इस चरण के क्वालिटेटिव डेटा की और वृद्धि हुई । इस वर्कशॉप में कार्यक्रम व्यवसायी और कार्यक्रम में भाग लेने वाली लड़कियों ने हिस्सा लिया। यह वर्कशॉप मेक्सिको सिटी, मैक्सिको में आयोजित की गई और इसमें अर्जेंटीना, ब्राजील, कोलम्बिया, मैक्सिको और पेरू से आठ एम्पावर के अनुदेयी साथिओं ने भाग लिया।

खुद लड़कियों से उनकी बात जानने के लिए, प्रोजेक्ट टीम ने ज़मीनी स्तर पर चल रहे प्रोग्रामों का सहयोग लिया। और, वी.वाई.ए. और बड़ी किशोर लड़कियों, दोनों को साथ लेकर रिसर्च किया । "गर्ल-इनसाइट (Girl-insight) प्रोजेक्ट", घाना, भारत, दक्षिण अफ्रीका और वियतनाम में चला। मेक्सिको कार्यशाला के प्रतिभागी संगठनों ने भी इसमें हिस्सा लिया। यह प्रयोग १० से १४ साल की लड़कियों के साथ किया गया। हर प्रयोग ग्रुप मे पांच से ग्यारह लड़कियां थीं और इस तरह ०७ लड़कियों का हर ग्रुप का औसत बैठा । भारत और घाना में लड़कियों के साथ फोकस-ग्रुप गतिविधियाँ भी आयोजित की गईं।

प्रोजेक्ट टीम द्वारा उपयोग की गयीं तकनीकों के बारे में अधिक जानकारी के लिए, और इन सभी डेटा स्रोतों और प्रोजेक्ट डेटा का विश्लेषण करने के लिए, कृपया अनुलग्नक (annexe) देखें ।

रिसर्च से जो पता चला

कई स्थानीय संस्थाएं, वी.वाई.ए. लड़कियों के साथ नए, बेहतर तरीकों से, और एक बढ़िया फोकस के साथ काम कर रही हैं । हमने जितना समझा-जाना था, उससे कहीं ज़्यादा ।

वी.वाई.ए. लड़कियों के साथ और उनके लिए कार्यक्रमों का क्षेतर, हमारे अनुमान से कहीं ज़यादा विकसित है । पिछले दशक से वी.वाई.ए. यानी बहुत छोटी उमर की किशोरियों की ख़ुशहाली को लेकर, अंतराष्ट्रीय सतर पर सोच बढ़ रही है । ये एक बड़े पैमाने पर जांच- विचार का विषय बना है । इसको कई कोशिशों से दिशा मिली है, जैसे Global Early Adolescence Study/ गलोबल अर्ली अडोलेसेनस सटडी (GEAS) - यानी एक विशव सतर पर, किशोरावसथा के शुरुआती सालों पे अधययन; और Gender and Adolescence: Global Evidence/ जेंडर एंड अडोलेसेनस : गलोबल एविडेंस (GAGE) यानी
किशोरावसथा पे विशव भर से परमाण । ये शोध इस क्षेतर में एक पहल हैं । मौजूदा संसथाओं (जैसे Save the Children/सेव द चिल्ड्रन, Population Council/ पापुलेशन कौंसिल, Rutgers Nether-lands,/रूतगेसर, नेदरलैंस, और Institute for Reproductive Health/ इंसिटयूट फॉर रिपरोडिकटव हेलथ) के ज़रिये जो सोच समझ और पढ़ाई का मटीरियल पहले से उपलबध था, वो मटीरियल इस पहल से बेहतर बन गया है। इससे रिसचर में वृधि भी हुई है । इस बात को हम सब मानने लगे हैं कि हमारे कार्यक्रम तभी ज़यादा परभावशाली होते हैं, जबे वो लड़कियों को अपनी ज़रूरतों को पहचानने और समझन [illegible] के लिए जो ख़ास नयी रिसचर की गयी, उससे ये पता चला है कि वाकई, सथानीय संसथाएं इस दायरे में बढ़िया काम कर रहीं हैं।

उनके परोगरामों में एक लचीलापन है, जिससे परिसितथि अनुसार वो अपना रूप बदल पाती हैं, लड़कियों की ज़रूरतों को पराथमिकता देती हैं और लड़कियों को परोगराम की नीव मान कर चलती हैं । गलोबल पैमाने पर वी. वाई. ए. लड़कियों को सहारा और सुरक्षा देने और उनहें सबल करने पर सोच बढ़ी है । इन सथानीय संसथाओं का काम उस गलोबल सोच से मेल खाता है और उसको और विसतृत भी करता है । इस काम में ये चुनौतियां बार बार सामने आती हैं- कि परोगराम में भाग लेने वाले ही नहीं मिलते, या फिर उनहें परोगराम के साथ जोड़े रखना और उनकी परोगराम में रूची बनाये रखना मुशिकल लगता है ... लेकिन ये सथानीय संसथाएं इन चुनौतियों से जूझ कर, कहीं आगे बढ़ चुकी हैं ।

तो इन कारणों से, ज़मीन से जुडी हुई सथानीय संसथाएं, वी. वाई. ए कार्यक्रमों की रचना के लिए एक बेंचमार्क बन गई हैं, हम उनसे परेरणा लेते हैं । इन संसथाओं का नाम लें तो उसमें TheGirlsLeg-acy/द गलसर लिगेसी का नाम ज़रूर आएगा , जो ज़िमबाबवे में पितृसता सोच से लड़ाई लड़ रही है ; । Am a Girl/आई ऍम अ गलर, नामक संसथान, जो बारबाडोस में जेंडर के आधार पर किये जाने वाले भेद भाव के ख़िलाफ़ लड़ता है ; और Tiempo de Juego, तीएमपो द जूएगो , जो कोलंबिया में ऐसी कार्यक्रम आयोजित करता है, जहां बचचे और जवान लोगों को गैंग से जुडी हिंसा से दूर रहने के साधन दिए जाते हैं, जिनसे उनहें परोतसाहन मिले । आज की तारीख में ऐसे परगतिशील और कारगर काम हो रहे हैं ।

संस्था पर स्पॉट लाइट : THE GIRLS LEGACY, द गर्ल्स लिगेसी

द गर्ल्स लिगेसी एक ज़मीनी स्तर पर काम करने वाली कारगर संस्था है, जो ज़िम्बाब्वे में जेंडर के आधार पर हो रही हिंसा को ख़त्म करने की कोशिश में जुटी है । ये लड़कियों और औरतों को ऐसी जानकारी और हुनर भी देती है, जिनसे वो अपने सामर्थ्य को कारगर कर सकें । ज़िम्बाब्वे में बहुत गरीबी है, जो अपने आप में एक बड़ी चुनौती है । साथ साथ, रूढ़िवादी पारंपरिक और धार्मिक रिवाज़ों का ज़्यादा दबाव भी लड़कियों पर ज़्यादा आता है । लड़कियों को अक्सर स्कूल से निकाल कर उनकी जल्दी शादी करा दी जाती है ताकि परिवारों को उनका आर्थिक भार उठाने से राहत मिले । द गर्ल्स लिगेसी कई कार्यक्रम चलाता है । इनमें क्लब्स की एक श्रंखला भी शामिल हैं, जो जगह जगह पे फैले हुए हैं ।

ये स्कूल में और स्कूल के बाहर, किशोरों के साथ काम करते हैं । 'एम्बर' नामक क्लब ख़ास १२ -१५ साल की लड़कियों के लिए है । ये लड़कियों की उम्र के हिसाब से उपयुक्त प्रोग्राम बनाते हैं । ये प्रोग्राम लड़कियों के बड़े होने के साथ खुद भी बढ़ते हैं । साथ साथ, लड़कियों को ऐसे रिश्ते बनाने में मदद करते हैं जो किशोरावस्था के आख़री सालों तक रहते हैं । ये "Letters to my Father"/ लेटर्स तो माई फादर (यानी मेरे पिता को लिखे खत) नामक एक प्रकाशन के द्वारा इन लड़कियों को जेंडर के आधार पर अपने तजुर्बो, और रोज़ मर्रा की ज़िंदगी की मुश्किलों पर बात करने की जगह देते हैं । The Girl's Legacy/ द गर्ल्स लिगेसी ने ज़वीपो नाम की एक कार्टून किरदार को भी रचा, जो एक ब्लैक लड़की होने का जश्न मनाती है । ये किरदार इस संस्था की आउटरीच एक्टिविटी में एक अहम रोल अदा करती है ।

फ़ुटनोट:
२ . इस लेख के अंत में चुनी हुई ऐसी कई टिप्पणियाँ मिलेंगी, जिनमें वो मूल मटेरियल है, जो वी.वाई.ए. लड़कियों से सम्बंधित कार्यक्रमों के लिए उपयुक्त है ।

प्रोजेक्ट के ऑनलाइन सर्वे के अनुसार, एम्पावरसे अनुदान पाने वाली संस्थाओं में से ८० % से ज़्यादा ऐसी हैं जो सक्रीय रूप से वी.वाई.ए. लड़कियों के साथ काम कर रही हैं । इनमें से करीब ६५ %, अपने कार्यक्रम की विषय वस्तु और प्लानिंग में, ख़ास वी.वाई.ए. लड़कियों को ध्यान में रख रही हैं (चित्र १और २ देखिये) । ये आंकड़े सितम्बर २०१८ में, एम्पावर की अनुदायी संस्थाओं के सर्वे के हैं, इसलिए सटीक रूप से उन पर ही लागू होते हैं । पर उसके बाद, अन्य स्त्रोत से जमा किये गए क्वालिटेटिव डेटा के अनुसार मोटे तौर पर लगाए गए इस अनुमान की पुष्टि हुई है । इस क्वालिटेटिव डेटा में शामिल है -जो ऐम्पावरकी अनुदायी संस्थाएं हैं, उनसे इंटरव्यू और उन अन्य ग्लोबल और स्थानीय संस्थाओं से भी, जो वी.वाई.ए. लड़कियों के साथ कार्यक्रम और रिसर्च करती हैं । साथ साथ २०१९ में, मेक्सिको में हुई वर्कशॉप के अलग-अलग नज़रिये ।

स्थानीय संस्थाओं को वी.वाई.ए. कार्यक्रमों की ज़रुरत और उनके योगदान के बारे में कुछ समझाने की ज़रुरत ही नहीं पड़ती । वो पहले से ही बहुत प्रगतिशील, गहरी सोच वाले और सन्दर्भ की बारीकियों को समझने वाले कार्यक्रमों को अमल कर रहे हैं । और लड़कियों को साथ लेकर, एक साथ कदम बढ़ा रहे हैं ।

फिगर १ . एम्पावरसे अनुदान पायी संस्थाओं का सर्वे
क्या आप आजकल १० -१४ साल की लड़कियों से साथ कार्यक्रम कर रहे हैं ?

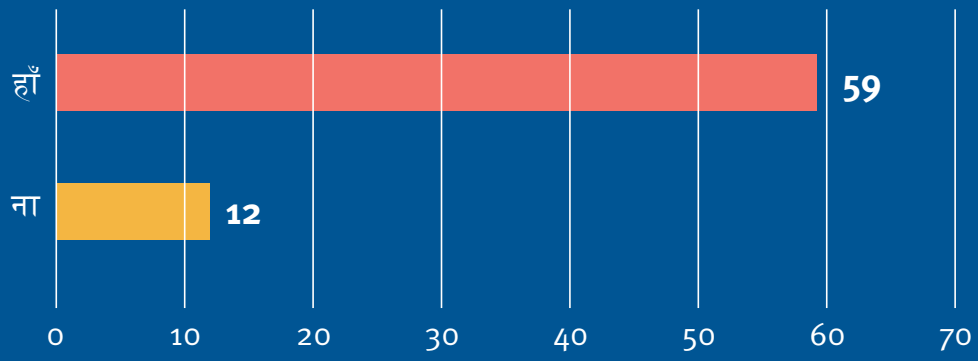

(चित्र २) . एम्पावर की अनुदेयी संस्थाओं के सर्वे से डाटा क्या आप १०-१४ वर्ष की लड़कियों के लिए विशिष्ट प्रोग्रामिंग दृष्टिकोण और सामग्री का उपयोग करते हैं?

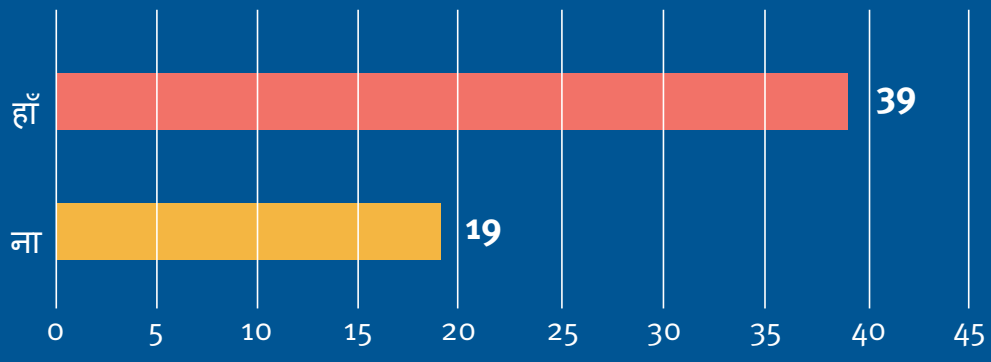

समय के साथ, स्थानीय कार्यक्रम जवान लोगों की ज़िंदगी पर और ध्यान देने लगे हैं । एक अकेला फोकस न रखकर, वो कार्यक्रम उस ज़िंदगी के सारे पहलुओं को ध्यान में रखकर बनाये जाने लगे हैं । प्रोजेक्ट टीम ने जिन प्रोग्रामों की जांच की, उन्होंने भी यही पाया कि कई सारी गतिविधियाँ, कम उम्र के लोगों पर फोकस करके तैयार की गयी हैं । ग्रामीण या शहरी इलाकों में ये प्रोग्राम, अक्सर लड़कियों के साथ स्कूलों में काम करते हैं । लेकिन अब कई संस्थाओं को अपने काम के पैमाने को बढ़ाने की इच्छा है । वो चाहती हैं कि उनके प्रोग्राम नए क्षेत्रों तक पहुँच पाएं, नए ग्रुप्स, नए लोगों तक पहुंचे । (चित्र ३ से एक संक्षिप्त रूप में ये पता चल जाएगा कि एम्पावर की अनुदेयी संस्थाओं की लोगों तक कितनी पहुँच रही है ।)

१०-१४ की उमर के बीच की लड़कियों की किन आबादियों के कौन कौन से भागों को आप अभी अपने प्रोग्राम से जोड़ पाए हैं ? (इसके कई अलग अलग जवाब संभव हैं)

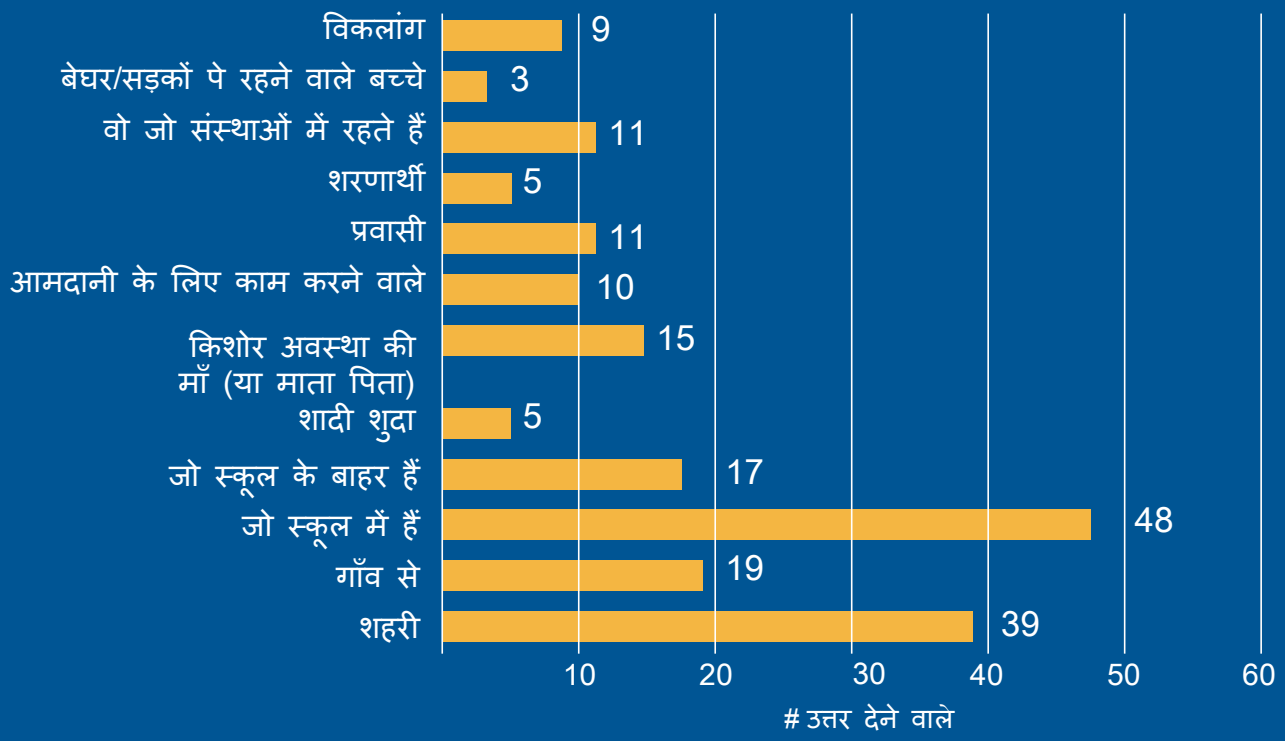

बारबाडोस के एक कार्यकर्ता ने बताया कि १० -१४ की उम्र बहुत निर्णायक उम्र होती है । इस लिए किशोरावस्था के पहले ही लड़कियों को वो साधन और जानकारी मिलने चाहिए जिनसे
"प्यूबर्टी, यानी सेक्सुअल रूप से प्रौढ़ बनने के इस बदलाव के दौर में, वो सकारात्मक और सही निर्णय ले सकें" । ये इस संस्था का एक अहम लक्ष्य है कि हर हालत में लड़कियों को वो सारी ज़रूरी जानकारी मिले, जिससे वो किशोरावस्था का सामना कर सकें । साथ में उनमें बात करने की क्षमता, और औरों के सामने अपनी बात कह पाने का आत्मविश्वास हो । 'लड़की' होने का क्या अर्थ होता है, 'सुन्दर' किसे कहते हैं, 'नारी सुलभ' क्या होता है, इन शब्दों और इन सोच के दायरों को हम विस्तृत करने की कोशिश में जुटे हुए हैं । इससे पहले कि उनके सामने मुश्किलें आएं, हम चाहते हैं कि लड़कियाँ सुरक्षित सकारात्मक रास्तों पर चल पड़ें ।" एक प्रोग्रामर का ये कहना था ।

एक लड़की का नज़रिया; "मुझे प्यूबर्टी (यानी किशोरावस्था, जब बदलाव आते हैं और बदन और मन दोनों, खासकर सेक्सुअल रूप से, बालिग़ होने लगते हैं) में आने के बहुत पहले से, आने वाले बदलावों के बारे में जानकारी मिलती, तो अच्छा होता. हमारे मासिकधर्म चालू होने से पहले, हमको प्यूबर्टी के बदलावों के बारे में और जानकारी चाहिए, ये भी कि वो बदलाव कैसे हो रहे हैं." किशोर लड़की, मेक्सिको

उसी तरह, इनमें से कई संस्थाओं ने शुरुआत में ही अपने प्रोग्राम का एक ख़ास फोकस रखा, जैसे कि- स्कूल में लड़की और अच्छा परफॉरमेंस दे पाए, किशोरावस्था में गर्भधारण के कम केस हों, या फिर जेंडर के आधार पर होने वाली हिंसा कम हो । लेकिन अब, उन्होंने एक व्यापक रूप अपनाया है जो अलग अलग पहलूओं को एक साथ जोड़ और समझ कर काम करता है । ये गौर करने वाली बात है कि जिन प्रोग्राम चलाने वालों को इस रिपोर्ट के लिए इंटरव्यू किया गया, उनमें से अधिकतर का कहना था कि ये तरीका- यानी लड़कियों की परिस्तिथियों को संपूर्ण रूप से समझ कर कार्यक्रम बनाना- एक ख़ास वजह से शुरू हुआ । वो ये, कि काम करते -करते, उनको वी.वाई.ए. लड़कियों की असली ज़रूरतें अच्छे से समझ में आने लगीं । कई मामलों में ऐसे बदलाव को वी.वाई.ए. लड़कियों ने खुद बहुत स्पष्ट रूप में चाहा और उसकी मांग की । इस तरह, लड़कियों ने प्रोग्राम की और विस्तृत सोच को सपोर्ट करके, और प्रोग्रामों की पहुँच बढ़ने पर अपना जोश दिखा के, संस्थाओं की दिशा को प्रभावित किया है । आज, बहुत से लोकल प्रोग्राम वाकई में लड़की को केंद्र बिंदु बना कर चल रहे हैं, और लड़कियों की ज़रूरतें, सच में इन प्रोग्रामों का आधार बन गयी हैं ।

मेक्सिको में, शुरुआत में एक संस्था का ये मकसद था कि वो स्कूलों में जा कर, पर्यावरण की रक्षा कितनी ज़रूरी है, इसके बारे में जागरूकता बढ़ायेगी । ये करने के लिए उन्होंने छोटी वर्कशॉप कीं । वर्कशॉप का एक ही सत्र होता था । पर जब जवान लोगों ने उनसे बात की, तो उनका फोकस ही बदल गया । "जैसे जैसे हम समुदायों के इन जवान लोगों की वास्तविक ज़िंदगी को उनकी ज़ुबानी सुनने लगे, हमारा नज़रिया और विस्तृत होता गया" इस काम से जुड़े हुए एक प्रोग्राम के आयोजक ने कहा ।

सपॉट लाइट में संसथा: तीएमपो द हुएगो

तीएमपो द हुएगो ज़मीनी सतर पर काम करने वाली कोलंबिया की एक संसथा है, जो ऐसे इलाके में काम करती है जहां गुंडों के गिरोह मुसतैद हैं, जहां हिंसा है, नशीले पदार्थों की लत है, किशोरावसथा में गभर्गरहण के कई केस हैं और हाई सकूल से बचचे अकसर राप आउट कर देते हैं । इस संसथा ने समुदाय के साथ, सॉकर(soccer) के ज़रिये नाता जोड़ा । इन सॉकर कलब का मकसद था, खेल के
ज़रिये सिखाना । तीएमपो द हुएगो वकत के साथ साथ बढ़ा और परोफेशनल भी हो गया । अब वो ऐसे कायर्करम आयोजित करता है, जो भाग लेने वालों की रुचि के हों । इनमें शामिल हैं, कला, चीयरलीडिंग और नाच । संसथा एक बड़े पैमाने पर ऐसे कायर्करम भी आयोजित करती है जो हिंसा से बचाव जैसी कोशिशों को बढ़ावा दे सके हिंसा से बचाव की कोशिश में शामिल हैं, मिलकर रात को माचर करना, समुदाय के अंदर आपस में बात चीत बढ़ाना । ये संस्था अपने प्रोग्रामों में काफी सारा ध्यान लड़कियों को और सशक्त बनाने में लगाता है । ऐसा करने के लिए, तीएमपो द हुएगो ने 'करीब की उमर की सलाहकार' वाला तरीका अपनाया है, जिसके अंतगरत थोड़ी बड़ी लड़कियों को रेन किया जाता है ताकि वो ११ -१६ की उमर की वी.वाई.ए. लड़कियों के साथ काम कर पायें । लड़कियों को फोकस में रखकर कुछ परोगराम वीमेन विन नामक संसथा के साथ मिलकर रचे गए हैं ।

उनमें कुछ भाग हैं, जो खुद की पहचान समझने में, और आथिरक मामलों की समझ बढ़ाने पर धयान देते हैं । संसथा के तौर पे भी, तीएमपो द हुएगो जेंडर में बरारबरी का मूल अपनाती है । यहां तनखवायें इस ही आधार पर दी जाती हैं और लीडरशिप टीम का संगठन भी इस बराबरी के आधार पर किया गया है । संसथा ने इस काम को कायररत रखने के लिए एक 'जेंडर गरुप' बनाया है, जो हर समय इसपर धयान रखता है, और इसमें सहायता देता है । तीएमपो द हुएगो लड़कों और जवान आदमियों में भी जेंडर की बराबरी की सोच बढ़ाता है । ऐसा करने से लड़कियों और जवान औरतों के साथ किये जाने वाले संसथा के काम में और समपूणरता आती है ।

सफलता के लिए वी.वाई.ए. लड़कियों का खुद सार्थक रूप से जुड़ना ज़रूरी है

अच्छे काम करने के तरीकों का उदाहरण बनने वाले जो संगठन हैं, वो वी.वाई.ए. लड़कियों को अपने काम में सार्थक रूप से शामिल करते हैं । हालांकि लड़कियों को काम में जोड़ने के महत्व पे सबकी सहमति है, सच तो ये है कि वी.वाई.ए. को काम पे लगाने के लिए काफी समय तक, कोशिश और संसाधनों की ज़रुरत होती है । कई अंतरराष्ट्रीय, गैर सरकारी संगठन/ एन.जी.ओ., वी.वाई.ए. के साथ महतवपूणर काम कर रहे हैं ।

कायर्करमों की डिज़ाइन से संबंधित परारंभिक रिसचर में लड़कियों को शामिल करने की शुरुआत हो रही है । ऐसी कोशिशें बड़े एन.जी.ओ. के लिए ज्यादातर कठिन होती हैं, क्यूंकि अक्सर उनके प्रोग्राम साइकिल छोटे प्रोग्राम साइकिल होते हैं ।लड़कियों के साथ साझेदारी का निरंतर रिश्ता बनाये रखना, ज़मीनी स्तर पे होने वाले कार्यक्रमों की ख़ासियत है ।

ज़िम्बाब्वे में एक संगठन ने कार्यक्रमों की इस तरह रचना की है, जहां लड़कियाँ अपनी पूरी किशोरावस्था के दौरान उससे जुड़ी रहती हैं । "प्रोग्राम ऐसे बने हैं कि लड़कियाँ आगे बढ़ते हुए ज़्यादा गहरा ज्ञान भी प्राप्त करती हैं और काम में उनकी कुशलता भी बढ़ती है। प्रोग्राम को पूरा करने पे वे प्रोग्राम कोच बन कर उसको औरों तक पहुंचाने की ज़िम्मेदारी भी लेती हैं ", प्रोग्राम से जुड़े हुए कार्यकर्ता ने कहा।

ज़मीनी स्तर पे काम करने वाले संगठन वी.वाई.ए., लड़कियों को साथ जोड़ कर, प्रभावशाली काम कर रहे हैं । यही कारण है कि प्रोग्राम उनकी ज़रूरतों के ज़्यादा अनुकूल, उनकी ओर उत्तरदायी और लड़कियों पर केंद्रित होने में सफल हो रहे हैं । इस प्रोजेक्ट के एम्पॉवर अनुदान के भागीदारों के सर्वे से यह पता चला, कि कई स्थानीय संगठन पहले से ही वी.वाई.ए. लड़कियों को अपने प्रोग्राम में शामिल कर रहे हैं । (चित्र ४ देखें)

चित्र ४: एमपॉवर ग्रांटी सर्वे के डेटा से- क्या लड़कियां आपके कार्यक्रमों की रचना में, या उसके विकास या नेतत्व में शामिल हैं?

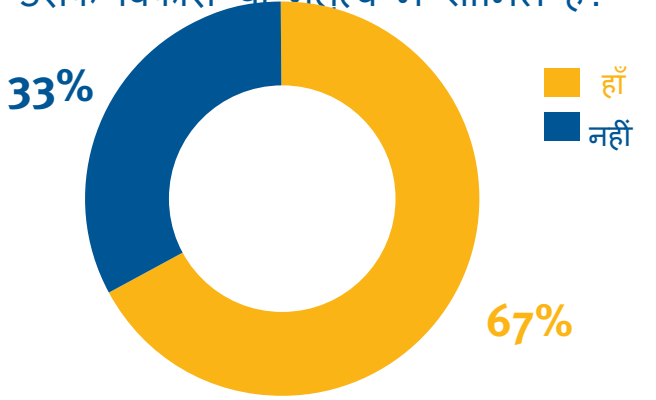

इन सब तरीकों से लड़कियों द्वारा संचालित प्रोग्राम और संगठनों की संभावना बढ़ती हैं। ये संगठन, लड़कियों के हाथों में नेतृत्व की बागडोर थमाते हुए, प्रोग्रामिंग के सभी पहलुओं की जानकारी भी देते हैं। अक्सर यह सब कर पाने के लिए हर एक लड़की के साथ व्यक्तिगत रूप से लगातार काम करना पड़ता है। जब लड़कियां, समय के साथ, अधिक से अधिक प्रोग्राम् सम्बंधित ज़िम्मेदारी और भूमिकाओं को समझने लगती हैं और उनको संभालने के काबिल हो जाती हैं, तब वे कार्यक्रम की रूप रेखा में भी अच्छा योगदान देने लगती हैं। इसके लिए ये ज़रूरी है कि समय से साथ ये लड़कियाँ और प्रभावशाली पदों को संभालें और संस्थान उनकी कुशलता को विकसित करते रहने पे ध्यान दे। इससे बहुत लाभ होंगे : लड़कियों की साझेदारी से प्रोग्राम और मज़बूत, प्रभावशाली और संवेदनशील बनते हैं।

एक दक्षिण अफ्रीकी संगठन में लड़कियाँ हफ्ते में दो या तीन बार, स्कूल के बाद मिलती हैं। लड़कियों का वह ग्रुप यह कार्यक्रम चलाता है, जिसने इस प्रोग्राम में पहली बार हिस्सा लिया था। "हम उन्हें 'वरिष्ठ लड़कियां '(सीनियर गर्ल्स) कहते हैं, "संगठन के एक प्रोग्रामर ने कहा। "हमारा काम करने का तरीका ये है कि हम उन्हें वापस आकर प्रोग्राम चालाने के लिए , और उसका विस्तार करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। इस की बहुत मांग है। " कार्यक्रम ख़त्म करके कई लड़कियाँ छोटी लड़कियों के साथ अपना खुद का कार्यक्रम शुरू करना चाहती हैं।

एक भारतीय प्रोग्रामर इस बात पर ज़ोर देता है कि लम्बे अरसे तक टिकने वाले बदलाव लाने के लिए लड़कियों के साथ लम्बी साझेदारी ज़रूरी है। प्रोग्रामर ने कहा, "अक्सर लड़कियों के अधिकारों पर कुछ समय तक काम होता है, तो लड़कियों की आकांक्षाएं बढ़ जाती हैं। पर कुछ समय बाद वो अपने को फिर अकेला पाती हैं। " इससे अलग, जब लड़कियों के हाथ में नेतृत्व होता है, तो एक ठोस बुनियाद बनती है और परिवर्तन बहुत तेज़ी से आता है। "गति तब मिलती है, जब एक अच्छे साइज़ का समूह बन जाये, और यह तब संभव है, जब छोटे संगठन, जो समुदायों और लड़कियों के साथ गहरायी से जुड़े हैं, लम्बे समय को ध्यान में रखते हुए, उनकी नियमित तरीके से मदद करें। समुदाय के लीडर - जिन्होंने सफलता के साथ कार्यक्रम में हिस्सा लिया है - वो कार्यक्रमों के इंजन बन जाते हैं ", उसने कहा।

एक लड़की का दृष्टिकोण: " जिन लड़कियों ने सफलता से कार्यक्रम पूरा किया है, उनको समुदाय में इस विषय की जानकारी बढ़ाने में शामिल होना चाहिये। इससे माता-पिता और समुदाय के सदस्य यह देख सकेगें कि कार्यक्रम ख़त्म करने ने बाद, ये लड़कियाँ क्या कर रही हैं। जब वे सफल लड़कियों को देखेंगे, तब वे अपनी बेटियों का अधिक समर्थन करेंगे। कई मायनों में, ये लड़कियाँ, जो कार्यक्रम में पुरानी हैं, समुदाय में विषय पर जागरूकता बढ़ाने वाली रोल मॉडल बन जाती हैं। " - किशोर लड़की, भारत

एक भारतीय प्रोग्रामर इस बात पर ज़ोर देता है कि लम्बे अरसे तक टिकने वाले बदलाव लाने के लिए लड़कियों के साथ लम्बी साझेदारी ज़रूरी है। प्रोग्रामर ने कहा, "अक्सर लड़कियों के अधिकारों पर कुछ समय तक काम होता है, तो लड़कियों की आकांक्षाएं बढ़ जाती हैं। पर कुछ समय बाद वो अपने को फिर अकेला पाती हैं। " इससे अलग, जब लड़कियों के हाथ में नेतृत्व होता है, तो एक ठोस बुनियाद बनती है और परिवर्तन बहुत तेज़ी से आता है। "गति तब मिलती है, जब एक अच्छे साइज़ का समूह बन जाये, और यह तब संभव है, जब छोटे संगठन, जो समुदायों और लड़कियों के साथ गहरायी से जुड़े हैं, लम्बे समय को ध्यान में रखते हुए, उनकी नियमित तरीके से मदद करें। समुदाय के लीडर - जिन्होंने सफलता के साथ कार्यक्रम में हिस्सा लिया है - वो कार्यक्रमों के इंजन बन जाते हैं ", उसने कहा।

जो लड़कियाँ शुरुआती किशोरावस्था को पार कर चुकी हैं, वो प्रोग्राम से तब तक ही जुड़ी रहेंगी जब तक

वो उसका महत्वपूर्ण हिस्सा बन पाएं और जब तक उन्हें अपना ज्ञान और अपनी संभावनाएं विकसित करने का मौका मिलता रहे। इस को एक असलियत बनाने के लिए, लड़कियों के लिए ऐसे सलाहकारों की व्यवस्था करनी चाहिए जो उनके अनुभवों से खुद गुज़री हों और इसलिए उन्हें और अच्छे से समझ सकें। इससे लड़कियों को सामूहिक गठन बनाने का प्रोत्साहन मिलेगा, सहकर्मियों को नेतृत्व करते हुए, एक दूसरे का साथ मिलेगा और प्रारंभिक कार्यक्रम बनाने में भी योगदान मिलेगा।

एक लड़की का दृष्टिकोण: "२०१५ में, मेरे पादरी ने चर्च में मुझे और अन्य लड़कियों को एक संगठन के बारे में बताया और मैं सिर्फ उसे देखने के लिए गयी। मुझे लगा कि यह कुछ धार्मिक किस्म का कार्यक्रम होगा। उस हफ्ते के ख़त्म होते-होते, मैंने पाया कि वहां मैं अपनी बात और साफ़ -साफ़ कह पा रही हूँ L मुझे एक सुरक्षित और सहायक वातावरण मिला जिसने मुझे एक किशोर लड़की के रूप में प्रोत्साहित किया, कि मैं अपने विचार और अपने अनुभव सबसे शेयर करूँ । मैं खुल के, सच्चाई से बोल सकी, और मुझे एक अपनापन महसूस हुआ । मैं जैसे संगठन के साथ बड़ी हुई, मैंने देखा, मुझे अपने विचारों को शेयर करने और उन्हें वास्तविकता में बदलने के लिए एक मंच मिला। मैंने एक सहायक के रूप में शुरुआत की। फिर मैं एक सहकर्मी नेता बनी, और फिर हमारे गर्मी में होने वाले 'समर कैंप' में एक जूनियर काउंसलर बनी । मुझे अधिकार और ज़िम्मेदारी मिली। बढ़ती ज़िम्मेदारी के साथ, मेरे अधिकार भी बढे L एक सहभागी होने से उत्तरदायी बनने तक का सफर, बहुत चुनौतीपूर्ण था। इस अवसर ने मुझे और समझदार होने और अलग अलग भूमिका निभाने के लिए मजबूर किया – और यह आसान नहीं था! और फिर मैं एक प्रोग्राम इंटर्न बन गयी। इस जिम्मेदारी से मुझे समझ आया कि लड़कियों के साथ अच्छी प्रोग्रामिंग और कार्यक्रमों की रूप रेखा तैयार करना, कितना कठिन होता है। जब आप इसमें भाग लेते हैं, तो यह बहुत आसान लगता है, लेकिन अब मैं देखती हूं कि ऐसे प्रोग्रामिंग, जो विभिन्न लड़कियों के लिए मददगार हो, उसको डेवेलप करने, और उसको लड़कियों तक ले जाने में, कितना काम लगता है । मैं लम्बे समय तक इससे जुड़ी रहना चाहती हूँ, तब तक, जब तक मैं काम आ सकूं L मैं यहां हमेशा नई चीज़ें सीखती रहती हूँ और लगातार यह देखती/समझती हूं कि इन चीज़ों को करने के बहुत सारे अलग तरीके हो सकते हैं। इन चार वर्षों में, मैं बहुत सी चीज़ें सीख और कर पाई हूँ । " - किशोर लड़की, बारबाडोस

चर्चित संगठन (संगठन जिसमे स्पॉट लाइट है): BRAVE

BRAVE/ब्रेव प्रोग्राम की प्रेरणा दक्षिण अफ्रीका में दस वर्षीय लड़कियों के एक समूह से मिली, जो अपने स्कूल और दंगे-फसाद से ग्रस्त समुदाय में और सुरक्षित वातावरण बनाना चाहती थीं । इस संगठन का काम है, सामाजिक हिंसा से निपटना, और लड़कियों को सशक्त बनाना । यह वर्कशॉप, छुट्टी पे किये जाने वाले कैम्प्स और हफ्ते के आखिर में किये जाने वाले कार्यक्रम चलाता है । साथ ही, उन लड़कियों के लिए, जो मिडिल स्कूल से हाई स्कूल जा रही हैं, ये एक लीडरशिप कैंप भी चलाता है।

ब्रेव पहले रॉक गर्ल्स के नाम से जाना जाता था । इस संस्था की ये कोशिश रहती है कि ये प्रतिभागियों को अपनेपन की भावना में बांधे रखे । इसका नारा "एक बार एक रॉक गर्ल, हमेशा एक रॉक गर्ल", संस्था के उनको साथ बांधे रखने की कोशिश का ही नतीजा है । इस कार्यक्रम के शुरुआती हिस्सों को पूरा करने के बाद, लम्बे समय तक रिश्ता बनाये रखने के लिए लड़कियों को प्रोग्राम डिज़ाइन और उनको अमल करने की ज़िम्मेदारी दी जाती है ।

वियतनाम के एक संगठन ने युवतिओं को अपनी मुख्य टीम से जोड़ने में इस ही तरह की सफलता पायी है । यहाँ प्रतिभागि, एक हिस्सा खत्म करके, और अगले आयु वर्ग में प्रवेश करने के बाद, ज़्यादा ज़िम्मेदारी ले सकती हैं। एक सहयोगी प्रोग्रामर ने बताया, “हम उन्हें ज़्यादा ज़िम्मेदारी के रोल में ले जाने की कोशिश करते हैं, उन्हें ज्यादा चीज़ों में शामिल करते हैं, और उन्हें और प्रशिक्षित भी किया जाता है”। “हम उन्हें अपने साथ काम कराते हैं जिससे वे हर तरह की जानकारी प्राप्त करती हैं। और फिर, जब वे बड़ी होती हैं, तब हम उन्हें और ट्रेनिंग देते हैं। हम उन्हें बताते हैं: सोच क्या है, कौन से तरीके अपनाये जाएंगे और क्यों, उन तरीकों के पीछे क्या सोच है । और फिर उन्हें सब समझ आता है। इन सारे नज़रियों से वो हमारी कोशिश को पूरी तरह से समझ सकती हैं। “

लड़कियों को सही अर्थों में शामिल करने के लिए, समय, कोशिशें, संसाधन- और धीरज की ज़रुरत होती है। इस प्रोजेक्ट में हिस्सा लेने वाले कई लोगों ने लड़कियों को शामिल करने के महत्व और आवश्यकता पर ज़ोर दिया । और यह करने की कठिनाई पे भी बात की । उन संगठनों ने भी, जो स्थानीय वी.वाई.ए. लड़कियों की ज़रूरतों को समझने के लिए नियमित रूप से रिसर्च करते हैं, यही कहा कि उनको भी लड़कियों को अपने प्रोग्राम में शुरू से आखिर तक जोड़े रखने में बड़ी मुश्किल होती है । ये भी हो सकता है कि वी.वाई.ए. लड़कियों में वो हुनर या विशेषग्यता न हो, जो प्रोग्राम डिज़ाइन कर पाने या प्रोग्राम के मूल्यांकन में पूरी तरह से शामिल होने के लिए, ज़रूरी हैं । इस संबंध में दो सवालों को ले कर गंभीर चिंताएं हैं । पहला ये, कि लड़कियों को अक्सर सिर्फ नाम के वास्ते शामिल किया जाता है । दूसरा ये, कि अगर उनको सच में पूरी तरह शामिल किया जाए, तो फिर इससे खर्चे बढ़ जाते हैं । संसाधन जुटाना समस्या पैदा करता है, लेकिन ज़्यादातर, स्थानीय संगठन इन समस्याओं का समाधान ढूंढने में सफल रहे हैं। जैसे -जैसे लड़कियाँ आगे बढ़ती हैं और उनकी क्षमता विकसित होती है, वो उचित ट्रेनिंग ले सकती हैं । और वो इस प्रशिक्षण के पहले भी, प्रोग्राम की एक्टिविटीज़ बनाने में, उसका कंटेंट और मूल्यांकन के तरीकों पे निर्णय लेने में योगदान कर सकती हैं, क्योंकि वे खुद इन सारी सच्चाइयों को अच्छे से पहचानती हैं । लड़कियों के साथ एक सार्थक साझेदारी करने से, कार्यक्रमों को उन वर्गों और समुदायों से जुड़ने का मौक़ा मिलता है, जिनके लिए वो बनाये गए हैं । लेकिन यह तभी संभव है जब कार्यक्रम से जुड़े कार्यकर्ता इस कोशिश में अपना समय और अपने संसाधन लगाएं ।

अमेरिका में एक प्रोग्रामर ने, लड़कियों की भागीदारी के मुद्दे पे सही संतुलन खोजने की बात की । उन्होंने कहा, “हमने इसपे काफी संघर्ष किया है, काफी दबाव भी रहा है। कहते हैं आपको उन्हें अपने सलाहकार बोर्डों पर लेना चाहिए। हाँ, ठीक है, उनको ले लेंगे, पर वे कुछ समझने वाले नहीं हैं। वे परेशान होंगी और ये सिर्फ दिखावा बन के रह जाएगा”। इसके बजाय, प्रोग्रामर के संगठन की ये कोशिश रहती है कि वो मौजूद युवा समूहों के साथ काम करें। वह इन समूहों से सलाह लेते हैं, और उन्हें प्रारंभिक रिसर्च में शामिल करते हैं। “हम विभिन्न प्रकार की ड्राइंग, लिखित टाइमलाइन, और मैप्पिंग का इस्तेमाल करते हैं ताकि हम उनकी ज़रूरतो और चिंताओं के बारे में ज़्यादा समझ सकें और उसके हिसाब से उनके लिए कार्यक्रम बना सकें। इसके अतिरिक्त हम युवा लोगों के छोटे समूहों के साथ रैपिड फील्ड टेस्ट (कम समय में फ़टाफ़ट की गयी काम की जांच) भी करते हैं। और औपचारिक रूप से उनकी पसंद या नापसंद के बारे में जानकारी लेते हैं । और उस आधार पे आगे बढ़ते हैं। ”

वी.वाई.ए. लड़कियों तक पहुंचने के लिए परिवारों और समुदायों के साथ साझेदारी करना ज़रूरी है, भला ये आसान न हो।

वी.वाई.ए. लड़कियों तक पहुंचने के लिए परिवारों और समुदायों के साथ साझेदारी करना ज़रूरी है। प्रोजेक्ट टीम की रिसर्च बताती है कि परिवारों के साथ नाता जोड़ना तो ज़रूरी होता ही है, साथ साथ समुदाय के साथ जुड़ना भी बहुत काम आता है । यह करना हमेशा आसान नहीं होता है। लेकिन अगर लगातार कोशिश करते रहें, तो फिर रूढ़िवादी या पारंपरिक मानसिकता वाले समुदायों से भी समर्थन मिलने लगता है- अगर उनको ये दिखाया जा सके कि हर एक कार्यक्रम का लड़कियों पे किस तरह अच्छा असर रहा है। तो सफलता के लिए, इन तीनों को एक दूसरे से जोड़ने की ज़रुरत है: लड़िकयां, उनके परिवार और समुदाय,और कार्यक्रम लागू करने वाले संगठन।

जैसा कि ज़िम्बाब्वे में एक प्रोग्रामर (कार्यकर्ता) ने कहा: "हम लड़कियों को जो जानकारी देते हैं, उनके परिवार वालों को भी उसकी ज़रुरत महसूस होती है । और अगर हम जाकर उनसे संपर्क बढ़ाएं, तो फिर वो भी और मददगार होते हैं।" यह प्रोग्रामर जिस संगठन से जुड़ी है, वह हर महीने, एक ऐसा सत्र चलाते हैं , जहां लोग एक दूसरे से सलाह मशवरा कर सकें, जिसमें लड़कियाँ, उनके माता-पिता, समुदाय के नेता और समुदाय से जुड़े हुए लोग भाग लेते हैं। एक बॉक्स में बिना नाम दिए, सवाल इकट्ठे किये जाते हैं, और हर सत्र में इन प्रश्नों पर चर्चा होती है । ये संगठन, उन क्षेत्रों में ख़ास काम करता है, जहाँ हिंसा, बाल विवाह और ऐसे मुद्दे ज़्यादा होते हैं, जिनका ख़ास लड़कियों की ज़िंदगी पे बुरा प्रभाव पड़ता है। "हम अक्सर सामुदायिक स्तर पर, इन मुद्दों पे विशेषज्ञों को काम करने के लिए लाते हैं । ये विशेषज्ञ यह बात साफ़ साफ़ दिखाते हैं की लड़कियों पे किस तरह से इन बातों का बुरा असर हो रहा है । " प्रोग्रामर ने समझाया। "फिर हम साथ में समाधान ढूंढने के लिए माता-पिता और इन मुद्दों से जुड़े और लोगों को शामिल करते हैं। और जब जरूरत होती है तो हम माता-पिता और परिवार वालों से अलग से भी मिलते हैं ।"

लड़कियों को प्रोग्राम से जोड़ने और जो भर्ती हुई हैं, उन्हें जोड़े रखने का सबसे प्रभावी तरीका होता है, उनके परिवार वालों को शामिल करना । और समुदाय में जो लोग लड़कियों की इज़्ज़त, सुरक्षा, और उनको उनका हक़ दिलाने का दायित्व लेते हैं, जिन्हें ड्यूटी बेअरर्स (duty bearers) कहते हैं, उनको भी शामिल करना । प्रोजेक्ट में जिन लोगों से सवाल किये गए, उनका मानना था कि लड़कियों तक पहुंचने के साधन के रूप में माता-पिता और अन्य देखभाल करने वालों के साथ जुड़ना, बहुत मददगार साबित होता है। यह विशेष रूप से तब महत्वपूर्ण होता है , जब आप वी.वाई.ए. लड़कियों के साथ काम करते हैं। लड़कियों का कार्यक्रमों में भाग लेने की अगर संरक्षकों की सहमति ना प्राप्त हो, तो अक्सर परिवार वालों और समुदाय, दोनों की तरफ से हानिकारक प्रतिक्रिया हो सकती है। सरकारी या स्कूल अधिकारी, धार्मिक नेता या समुदाय के नेता, खुद लड़कियां, ये सब उस समाज की ड्यूटी बेअरर्स होते हैं । ये लड़कियों को पहचान के, खुद उन्हें प्रोग्राम में भर्ती दिला सकते हैं। मूलरूप से, जब तक लड़कियों को व्यापक सामुदायिक समर्थन मिलता रहे, वे कार्यक्रमों के साथ बनी रहती हैं।

बड़े गैर सरकारी संगठन (NGOs) के लिए स्थानीय संस्था के साथ भागीदारी एकदम ज़रूरी होती है । वो इसलिए क्यूंकि अक्सर ऐसे बड़े संगठन के सामुदायिक स्तर पे कम संपर्क होते हैं, और इसलिए वो बहुत कमजोर वर्ग की लड़कियों तक नहीं पहुँच पाते। जो संगठन समुदाय के कल्याण को अपना लक्ष्य मानते हैं, वो ड्यूटी बेअरर्स के साथ सबसे बढ़िया तरीके से आपसी लाभ को बढाने वाले रिश्ते बनाते हैं। क्योंकि ज़्यादातर वी.वाई.ए. (वी.वाई.ए.) कार्यक्रम, उन लड़कियों के साथ काम करते हैं, जो अभी भी स्कूल में हैं - और कभी-कभी ये कार्यक्रम स्कूल परिसर में ही चलते हैं । इस लिए, प्रोग्राम की सफलता के लिए ये ज़रूरी हो जाता है कि स्थानीय शिक्षकों का सहयोग रहे। स्थानीय और राष्ट्रीय अधिकारियों का समर्थन छोटे संगठनों को अन्य ज़िलों और क्षेत्रों में भी अपने काम को दोहराने में मदद कर सकता है। चित्र ५ उस कार्य का एक चित्र है, जो वो ढेर सारा काम दिखाता है जो एम्पावर अनुदेयी/ ग्राँटी, वी.वाई.ए. समुदायों को अपने साथ जोड़ने के लिए कर रहे हैं ।

चित्र ५ उस कार्य का एक चित्र है, जो वो ढेर सारा काम दिखाता है जो एम्पावर अनुदेयी/ ग्राँटी, वी.वाई.ए. समुदायों को अपने साथ जोड़ने के लिए कर रहे हैं ।

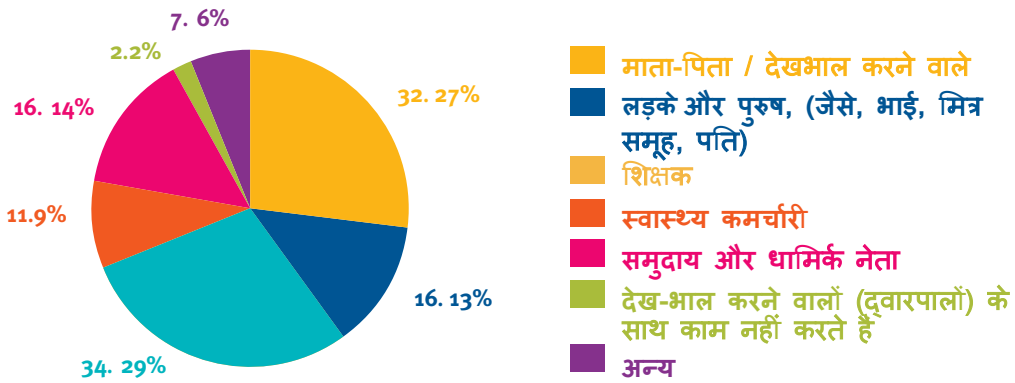

परिवारों और समुदायों के साथ साझेदारी करने का सबसे अच्छा तरीका यह है कि एक ही समय दोनों के साथ संबंध बनाये जायें। यह लक्ष्य, नुक्कड़ नाटक, परिवारों के साथ मनोरंजन के दिन, स्वास्थ्य मेले या स्कूल में प्रेजेंटेशन द्वारा, संभव किया जा सकता है। जो संस्थाएं इस रिसर्च में लगी हुई हैं, उन्होंने माता-पिता और समुदाय के सदस्यों तक पहुंचने के लिए स्पष्ट प्रोग्रामिंग विकसित की है। इस प्रोग्रामिंग का मकसद, घर -घर जा कर भरोसेमंद रिश्तों की स्थापना करना है। अक्सर प्रोग्राम से जुड़ा हुआ कोई कार्यकर्ता, खुद लोगों के घर जाकर, आपसी भरोसा बढ़ाता है, और साथ- साथ कार्यक्रमों में अनुपस्थिति की वजहों को समझ कर, दुविधाओं को सुलझाने की कोशिश करता है । कभी-कभी, इसका समुदाय-स्तर पर भी प्रभाव पड़ता है, जहाँ इच्छुक माता-पिता कार्यक्रमों को बढ़ावा देने की वकालत करते हैं। सिकंदा, मैक्सिको में एक ऐसी संस्था है जो लड़कियों, माताओं और दादिओं को एक साथ लाकर, पीडियों को जोड़ती है, और इस तरह बच्चों की सुरक्षा के समूह बनाती है। अन्य संगठनों में, इस काम से जुड़े हुए माता-पिता, सिग्नेचर कैंपेन या कार्यक्रमों को बढ़ावा देने वाली ऐसी किसी अन्य कोशिश में जोश के साथ भाग लेते हैं।

स्पॉटलाइट में संगठन: फेमिनिस्ट अप्रोच टु टेक्नोलॉजी (FAT)

भारत में, विज्ञान, टेक्नोलॉजी, इंजीनियरिंग और गणित
(STEM) संबंधित व्यवसायों में महिलाओं को शामिल करने के लिए, २००७ में, फेमिनिस्ट अप्रोच टु टेक्नोलॉजी (FAT) को स्थापित किया गया था। यह संस्था परिवारों के साथ नियमित रूप से मिलती है। और अक्सर घर-घर जा कर अपने कार्यक्रमों की जानकारी भी देती है। लड़कियाँ इन कार्यक्रमों में, अपने माता-पिता या देख-भाल करने वालों के साथ, दाख़िला लेती हैं। FAT, हर सप्ताह उन लड़कियों को और परिवारों को घर जा कर भी मिलता है, जो पिछले सप्ताह, किसी वजह से, प्रोग्रामिंग में अनुपस्थित रहे । इन साप्ताहिक सामुदायिक दौरों का उद्देश्य यह जानना भी है, कि लड़कियाँ किन वजहों से नहीं आपाईं। और यह समझ कर, साथ ही उनको कार्यक्रमों में वापस आने के लिए प्रोत्साहित करना। FAT टीम परिवारों के साथ जुट क,र कई अन्य तरीकों से काम करती है। जिसमें शामिल हैं, हर महीने परिवारों के साथ बातचीत, जिसका ख़ास फोकस होता है, माता-पिता और देख-भाल करने वालों के साथ बेहतर बातचीत और आपसी ताल मेल का माहौल बनाना।

घाना में NORSAAC के एक प्रोग्रामर ने कहा कि कोई भी प्रक्रिया शुरू होने से पहले, उनका संगठन पहले माता-पिता, पारंपरिक नेताओं और समुदाय के अन्य बड़े बुजुर्गों को जानकारी देता है और समझाता है, जिससे उनकी सहमति निश्चित हो। “एक बार अगर समुदाय के ये प्रभावशाली व्यक्ति परियोजना का मकसद और उसके पीछे की सोच को समझ लेते हैं,” प्रोग्रामर
ने कहा, “तो इच्छुक लड़कियों के लिए परियोजना में जुड़ना और स्वेच्छा से गतिविधियों में भाग लेना सरल हो जाता है... [इस तरह] एक अच्छा वातावरण बनता है जहाँ लड़कियाँ अपनी खुशी से काम में भाग लेती हैं। “

इसके आलावा एक और तरीका यह है कि, परिवारों और समुदायों की ज़रूरतों को समझा जाये, और फिर संस्था की ऐसी गतिविधियां आयोजित की जाएँ जिनसे ये ज़रूरतें पूरी हों । पेरू में एक संस्था, PROMSEX, उपयोगी सेवाओं के लिए जो पारिवारिक आयोजन होते हैं, उन्हें राष्ट्रीय आईडी कार्ड रजिस्ट्रेशन करने के प्रावधान के साथ जोड़ती है। सबसे अच्छा तरीका वो है , जो संदर्भ को समझता है। लेकिन इन सभी आउटरीच प्रयासों का लक्ष्य हमेशा एक ही होता है: लड़कियों, उनके परिवारों, उनके समुदायों और लागू करने वाले संगठनों के बीच मजबूत और सहायक रिश्ते बनाना।

स्पॉट लाइट में संस्था : Vietnamese American Non- Governmental Organization Network वियतनामी अमेरिकी गैर-सरकारी संगठन नेटवर्क (VANGO)

VANGO का मिशन, वियतनाम में, मानवीय और विकास कार्यों को मजबूत करना है। VANGO , हेल्थ इनिशिएटिव थ्रू पियर एजुकेशन (HIPE) यानी अपने साथवालों को जागरूक करके स्वास्थ पे शिक्षा को बढ़ावा कार्यक्रमों का फौन्डिंग पार्टनर भी है। HIPE , युवाओं को उनके अधिकारों के बारे में जागरूक करके और समुदाय को साथ में जुटाके, वंचित समुदायों में स्वास्थ्य के मसले को, और उनके सामाजिक मुद्दों को संबोधित करता है। HIPE , स्कूल-आयु वर्ग के युवा, जो स्वास्थ्य अच्छा न होने की वजह से खतरे में पड़ सकते हैं, उनको सहकर्मी स्वास्थ्य शिक्षक बनने के लिए प्रशिक्षित करता है। ये युवा, न केवल स्कूल- आधारित प्रशिक्षण चलाते हैं, बल्कि समुदाय में अपनी भूमिका के बारे में भी विस्तार से विचार करते हैं। यहाँ तक कि उन्होंने, अपनी खुद की पहल से, ऐसे स्थान बनाने की शुरुआत कर दी हैं, जहाँ युवा सुरक्षित रहें । ये कार्यक्रम अक्सर अपने प्रतिभागियों के जीवन का ऐसा सार्थक हिस्सा बन जाते हैं कि उनके परिवार "HIPE परिवार" के रूप में जाने जाते हैं। इस श्रम के दो प्रभाव साफ़ दिखते हैं ।

एक, जो HIPE के प्रोग्राम का वी.वाई.ए. /कम उम्र की किशोरावस्था की लड़कियों पे असर होता है । और दूसरा, पारिवारिक स्तर की ज़रूरतों को पूरा करने के लिए VANGO जो काम करता है, उसका असर । पहले, यह संगठन, समुदाय की आवश्यकताओं और उपलब्ध संसाधनों का एक महत्वपूर्ण चार्ट बनाता है । और फिर, ज़रूरतों को पूरा करने के लिए, उपलब्ध संसाधनों के साथ साथ, अपने नेटवर्क को जुटाता है।

कई संगठनों को अभी भी पिता और गैर-पारंपरिक देखभाल करने वालों को साथ में जोड़ने के लिए बहुत संघर्ष करना पड़ता है । घर -घर जा कर मिलने से, और सामुदायिक कार्यक्रमों से, अक्सर माताओं को तो प्रभावित किया जा सकता है, लेकिन पिता और गैर-पारंपरिक देखभाल करने वालों को उसी तरह प्रभावित करने में ज़्यादा मुश्किल होती है। इस परियोजना के लिए इंटरव्यू किया किये गए अधिकांश लोग, जो इस काम के साथ जुड़े हुए हैं, उन्होंने ज़ोर दे कर ये समझाया कि, "पिता को, जहां वे हैं, वहीँ जा कर मिलना चाहिए "। चाहे इस का मतलब चाय स्टालों या स्पोर्ट्स बार जाना हो। क्योंकि पिताओं की, स्कूलों या सामुदायिक संगठनों द्वारा आयोजित कार्यक्रमों में, भाग लेने की संभावना कम है।इसका एक कारण उनका कठिन काम या रोज़ का व्यस्त जीवन हो सकता है । लेकिन इसका दूसरा कारण, यह पारंपरिक सोच भी है कि, वी.वाई.ए. प्रोग्रामिंग के साथ जुडी हुई चीज़ों की ज़िम्मेदारी माँ की होती है, और पिता का इससे कुछ लेना देना नहीं है । कुछ संगठनों ने इस मानसिकता को बदलने की कोशिश की है। उन्होंने, अनौपचारिक रूप से, अकस्मात् सोचे हुए कार्यक्रमों को वहां आयोजित किया है, जहां लड़कियों के पिता के होने की संभावना है ।इस तरह से आयोजित कार्यक्रम अधिक रुचि और जिज्ञासा पैदा करती हैं।

अमेरिका के एक प्रोग्रामर ने उल्लेख किया, कि देखभाल करने वाले पुरुषों को प्रोग्राम की गतिविधियों में शामिल करना, एक बड़ी चुनौती है। उसके संगठन ने देखभाल करने वाले पुरुषों को शामिल करने के लिए, कई अलग-अलग तरीकों की कोशिश की है, खासकर उनके लिए, जो दिन-भर काम कर रहे हों। "हमने अलग-अलग शेड्यूल अपना कर कोशिश की है - सप्ताह के अलग-अलग दिन, दिन के अलग-अलग समय ... लेकिन हमको फुटबॉल के खेल और साथ में शराब, से हार माननी पड़ती है।" एक तरीका जो शायद काम करता है, वह यह है कि, पूर्व घोषणा करे बिना लड़कियों के पिता को अचानक जा मिलो । "क्योंकि जब आप पहले से योजना बनाते हैं, और उसके बारे में आप लोगों को बताते हैं कि, इस समय और इस स्थान पर एक सभा होने जा रही है, तो ये (पिता) लोग वहां नहीं आते। बल्कि वे कहते हैं कि मेरी पत्नी इसमें शामिल होगी। या फिर, यह मेरी ज़िम्मेदारी नहीं है। लेकिन जब आप अचानक पहुँच जाते हैं, और कहते हैं, 'अरे, हम यह गति विधि कर रहे हैं', लोग उत्सुक होते हैं और वे आते हैं। यह हमारे लिए आश्चर्यजनक था , और थोड़ा हमारी सहज सोच के विपरीत भी । "

अगर पुराने खयालातों वाले और पारंपरिक समुदायों का समर्थन चाहिए, तो जम कर आउट रीच प्रोग्राम चलाने चाहिए और साथ साथ वी.वाई.ए. लड़कियों पर दिखाई देने वाले सकारात्मक प्रभावों का प्रचार करना चाहिए । दोनों के जुटाव के माध्यम से यह समर्थन प्राप्त किया जा सकता है। कई उत्तरदाताओं ने यह भी बताया की कई बार उनके संगठनों को रूढ़िवादी या पारंपरिक वातावरणों से भारी विरोध भी झेलना पड़ता है । लेकिन उन्होंने साथ - साथ ये उम्मीद भी जताई कि इन समुदायों के साथ, एक भरोसे से भरा और सार्थक संबंध बनाया जा सकता है। इन संगठनों ने यह सीखा है, कि सबसे ज़्यादा विरोध करने वाले या आड़े आने वाले परिवारों को कैसे समझाया जाये ।समझाने के तरीकों में अच्छा तरीका यह है कि मासिकधर्म संबंधी शिक्षा और शारीरिक स्वास्थ्य के दृष्टिकोण पर परिवारों के साथ चर्चा की जाए - यह ऐसे मुद्दे हैं जिनका महत्व देखभाल करने वाले समझते हैं, पर इन विषयों पर बातचीत करने में उनको मुश्किल आती है।

भारत में एक प्रोग्रामर ने, परिवारों को संपर्क करते समय, निपुणता और संवेदनशीलता की आवश्यकता की बात रखी। “आपको बस ये करना है,” प्रोग्रामर ने कहा, “कि उनके लिए सबसे अहम मुद्दा क्या है, जिससे वो आपकी बात से सहमत हो जाएँ, बस उसको पहचाना है।” जब उसका संगठन, शुरुआती किशोरावस्था के पाठ्यक्रम को संचालित कर रहा था, तब उन्होंने ९ - से १३ वर्ष की लड़कियों के माता-पिता के साथ चर्चा के मौके आयोजित करे। इन सेशंस के दौरान, कार्यक्रम के कर्मचारियों ने सीखा कि, मासिक धर्म की शिक्षा और स्वच्छता ,वास्तव में माता-पिता के लिए बहुत महत्वपूर्ण विषय है। माता-पिता यह चाहते हैं कि लड़कियाँ अपने शरीर और अपनी मंज़ूरी और सहमति के महत्त्व, दोनों के बारे में अधिक समझें। “और क्योंकि इन दोनों पहलूओं में हमारी प्रमुख क्षमता है, इसलिए आमतौर पर माता-पिता के साथ हम इस विषय से चर्चा शुरू करते हैं,” प्रोग्रामर ने कहा।

एक लड़की का नज़रिया:
“यौवन, कामुकता,सेकसुआलिटी, परजनन/रिपरोडकशन और जेंडर से संबंधित विषयों से शिक्षक कतराते हैं। हालाँकि ये विषय पा यपुसतकों में शामिल हैं, शिक्षक अकसर हमें पनना पलट के अगले अधयाय पर आगे बढ़ने के लिए कहते हैं। लेकिन कुछ मामलों में, कुछ शिक्षकों ने हमारी मदद की है - इससे फक्र पड़ा। ” - किशोर लड़की, मैकिसको

दक्षिण अफ्रीका के एक प्रोग्रामर ने भी माता-पिता के साथ विचारों के आदान प्रदान की अपार संभावनाओं की बात की।
“ज़्यादातर परिवार पहले से ही जुड़ने के इच्छुक होते हैं । हम परिवारों के साथ ताल मेल बढ़ाने की कोशिश करतें है, और उनके साथ पारिवारिक कार्यक्रम भी करते हैं । जैसे पारिवारिक फोटो दिन, जहां हम परिवारों के साथ उनकी लड़कियों की फोटो लेते हैं और उन्हें देते हैं।” यह संगठन नियमित पारिवारिक और सामुदायिक कार्यक्रम आयोजित करता है, जहाँ लड़कियाँ, सीखी गई बातों को बताती हैं और समझती हैं। माता-पिता भी इन चीज़ों में काफी शामिल होते हैं: उनका अपना व्हाट्सअप्प (WhatsApp) ग्रुप है । वे सड़क की यात्राओं को सपोर्ट करते हैं, और एक शानदार रूप से कार्य का हिस्सा बनते हैं। “वे व्हाट्सअप्प (WhatsApp) ग्रुप को सामुदायिक पुलिसिंग के लिए उपयोग करते हैं, जिसके ज़रिये वे लड़कियों को सुरक्षित रखने के लिए सुरक्षा अपडेट देते हैं,” प्रोग्रामर ने समझाया। “लेकिन कुछ मानसिकताओं को बदलना मुश्किल होता है। हमारे साथ एक लड़की थी जो हाई स्कूल पूरा करने के बाद, न चाहते हुए भी गर्भवती हो गयी । उसकी माँ ने बच्चे को रखने के लिए उस पर बहुत दबाव डाला, बावजूद इसके कि वह लड़की यह नहीं चाहती थी। इन सामाजिक सोच के तरीकों को जड़ से हटाने के लिए, हमको स्पष्ट रूप से बहुत कुछ करना है। ”

एक लड़की का नज़रिया : "संस्थाओं को माता पिता से बात करनी चाहिए, ताकि वो समझ सकें कि ये क्या प्रोग्राम है, और फिर अपने बच्चों को भेजने के लिए राज़ी हों. अगर संस्थाएं शुरू में ही माता-पिताओं से बात कर लें- प्रोग्राम में उनकी बच्ची का क्या सफर होगा, प्रोग्राम से क्या उम्मीदें की जा सकती हैं और प्रोग्राम का पाठ्यक्रम/करिकुलम क्या है. ऐसा करने से ड्राप आउट करने वाली लड़कियों की संख्या शायद बहुत कम हो जाएगी" किशोर लड़की, भारत

प्रोग्राम बनाने के तरीके ऐसे होने चाहियें, जो बदलाव की संभावना लेके चलें और लड़कियों की बदलती ज़रूरतों और रूचियों को ध्यान में रखें।

तो वी.वाई.ए. लड़कियों के लिए असरदार प्रोग्रामिंग को कैसे पहचाना जाए ? विषय वस्तु के कुछ ख़ास पहलू हैं जिनपे ध्यान देना चाहिए, पर सबसे असरदार तरीका है, वी.वाई.ए. लड़कियों की ज़रूरतों और रूचियों के अनुसार अपने प्रोग्राम को बदल पाने की क्षमता रखना।

हर लड़की के समुदाय के ख़ास हालातों के अनुसार, ये ज़रूरतें और रूचियां बदलती रहेंगी। कुछ सन्दर्भों में, असरदार प्रोग्रामिंग बनाने के लिए, उम्र और जेंडर को ध्यान में रख के, अलग प्रोग्राम बनाने की ज़रुरत पड़ सकती है। एक चीज़ जो हमेशा काम आएगी, वो है ऐसी प्रोग्रामिंग बनाना जो सुझावों और फीडबैक के आधार पर अपने आप को बदल पाए।

ज़िम्बाब्वे की एक संस्था हमें बताती है कि वो किस तरह से लड़कियों की बदलती ज़रूरतों को अपने प्रोग्राम बनाने में शामिल करती रहती है "हमारी संस्था की नियम पुस्तिका/ मैन्युअल हमें एक ढांचा देती है", इस संस्था से जुड़ी एक प्रोग्रामर ने कहा " और हर समुदाय और क्लब इसको अपनी ज़रूरतों के अनुकूल, काम में लाता है।"

"हमारी नियम पुस्तिका एक जीती जागती हस्ती जैसी है, उसमें ऊर्जा है, और अपने को बदल पाने की शक्ति है। हर साल हमें कोच अपना फीडबैक देते हैं, जिससे हम उनके लिए नए साधन बना पाएं। हम एक टूलकिट भी तैयार कर रहे हैं। नियमपुस्तिका इन सबकी नींव है , पर हम हर मॉड्यूल में रिपोर्टिंग और अपनी बात की वकालत करने के साधन भी जोड़ेंगे ... साल के बीच तक हम "लड़कियों द्वारा, लड़कियों पे" का संशोधित टूलकिट बना डालेंगे। हम हर वक्त लड़कियों के अनुकूल काम करना सीख रहे हैं, बदलाव ला रहे हैं "।

प्रोजेक्ट को जानकारी देने वाले मुख्य निदेशकों की इस बात पे सहमति है, कि कुछ विषय वस्तु ऐसे हैं, जो वी.वाई.ए. लड़कियाँ के लिए हो रहे सारे प्रोग्रामों में शामिल की जानेचाहियें। जैसे यौवन और प्यूबर्टी, और उसके साथ जुड़े वो सारे बदलाव जो शरीर में आते हैं। पीरियड/ रजोधर्म का पहली बार होना, रजोधर्म, मासिकधर्म सम्बंधित बदन की सफाई, बदन पे स्वाधिकार और मर्ज़ी। (चित्र ६ में वो विस्तृत पहलू हैं, जिसे आज की एम्पावर अनुदायी संस्थाएं अमल कर रही हैं)। ज़्यादातर संस्थाएं हक़ और अधिकारों को आधार बना के काम करती हैं, और लड़कियों को सबल बनाते हुए और बड़े ढाँचे के अंदर अपने काम की जगह बनाते हुए काम करती हैं।

चित्र ६. एम्पावर, अनुदायी सर्वे का डेटा

१०-१४ की उम्र की लड़कियों के साथ आपकी प्रोग्रामिंग का फोकस क्या है? कृपया इन विषयों में अपने प्रोग्राम की प्राथमिकताओं के अनुसार एक क्रम बनाइये। उस विषय को '१ ' बतलाइये जिसे आप सबसे ज़्यादा प्राथमिकता देते हैं।

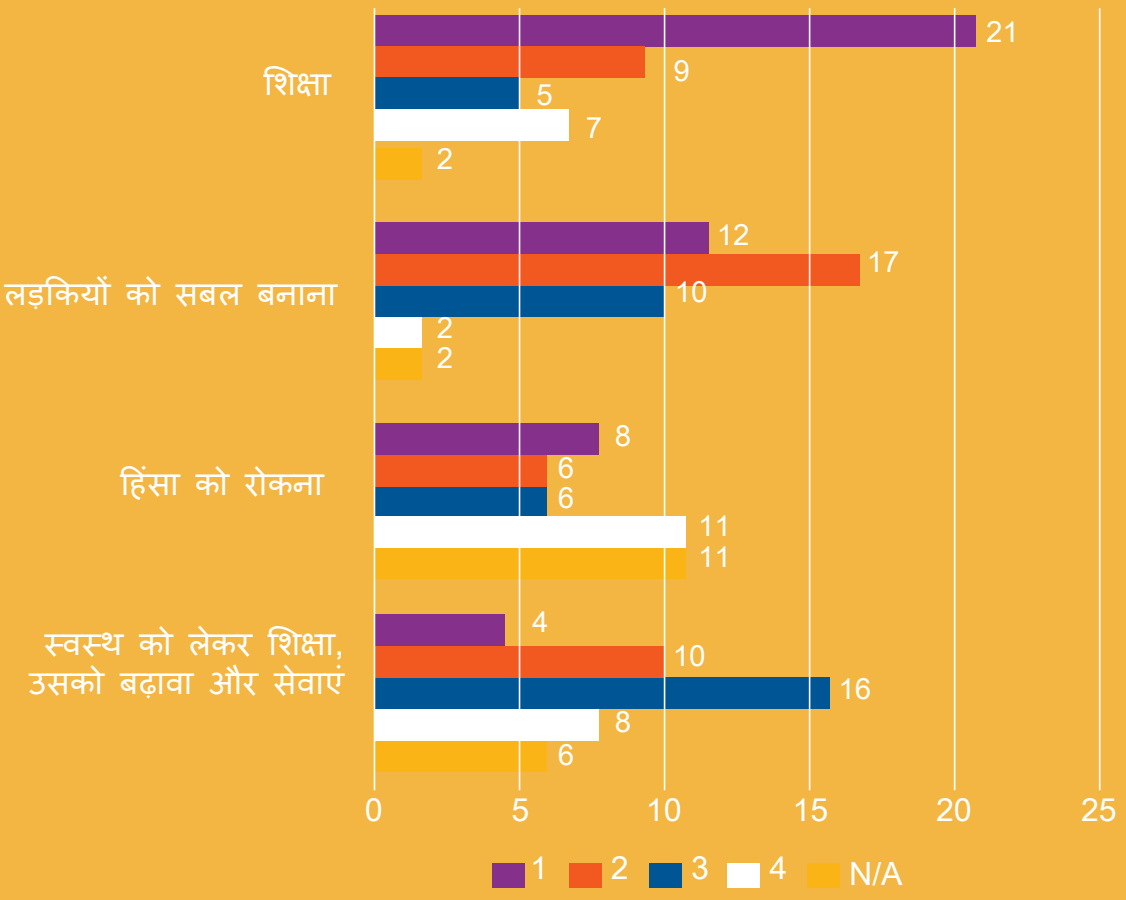

आम तौर पे, कार्यक्रम बनाने का सबसे असरदार तरीका होता है, वी.वाई.ए. लड़कियों की बदलती ज़रूरतों, रुचियों और हुनर के हिसाब से प्रोग्राम को ढालना । यानी एक ऐसा नज़रिया अपनाना जो स्थानीय हो और लड़की पर केंद्रित हो । जहां लड़कियों को पहल लेने में आसानी लगे, और वो बेझिझक आगे आके अपनी बदली हुई परिस्थिति के अनुसार प्रोग्राम में बदलाव लाने की बात बढ़ा पाएं । सिखाने के और पाठ्य-विषय को समझाने के तरीके- चाहे वो उस प्रोग्राम में बनाये गए हों या फिर बाहरी स्रोतों से ले कर विकसित किये गए हों -ऐसे होने चाहियें जो बदले जा सकें, मज़ेदार हों और उस उम्र की लड़कियों के समझ के अनुसार हों ।

बारबाडोस की 'I Am a Girl' /आई एम् अ गर्ल, हर साल अपने प्रोग्रामों को लड़कियों के फीडबैक के आधार पर बदलती है । अन्य संस्थाएं फिल्म, कार्टून पात्र और सोशल मीडिया के ज़रिये लड़कियों तक पहुँचने की कोशिश करती हैं । इन सब में सामान्य है, प्रोग्राम करने का ऐसा लचीला तरीका, जो लड़की को केंद्र बनाता है और लड़कियों के अनुसार है । जो स्थानीय ज़रूरतों को समझ कर, उस हिसाब से अपने को ढालता है ।

बारबाडोस की एक प्रोग्राम संचालक ने कहा कि प्रोग्राम को ऐसा बनाये रखना, जिसमें बदलाव लाये जा सकें,

बहुत ही ज़रूरी है :"हमारे पास नियमों की गाइड है, पर हम अपने को उन तक सीमित नहीं रखते । उन नियमों को ध्यान में रखते हुए भी हम फ्लेक्सिबल रहते हैं, बदलाव की गुंजाइश रखते हैं । हम वर्कशॉप कराने वालों को भी यही हिदायत देते हैं, कि हमारे सुझावों को प्रेरणा मान कर, नयी एक्टिविटी बनाएं । उन्हें सिर्फ लिखित नियम फॉलो करने की ज़रुरत नहीं । और हम लड़कियों से उनकी राय लेते हैं कि उनको किन चीज़ों में रुचि है । प्रोग्राम के बारे में निर्णय लेने में लड़कियों को हमेशा शामिल किया जाता है ।"

फिलहाल ऐसे बहुत कम वी.वाई.ए. प्रोग्राम हैं जो अलग अलग उम्र के हिसाब से अलग अलग गतिविधियां आयोजित कर रहे हैं । इसमें कोई शक नहीं, कि इसकी ज़रुरत है । कई संस्थाओं ने हाल ही में अपने प्रोग्रामों में छोटी उम्र में भाग लेने वालों के अनुसार, विषयवस्तु और तौर तरीकों में तबदीली की है ।`

इन संस्थाओं के द्वारा आयोजित करे जाने वाले कार्यक्रम, वी.वाई.ए. की ख़ास ज़रूरतों को ध्यान में रखते हुए, अब भी अपने को बदलने की कोशिश में लगे हैं । हमारे सवालों के जवाब देने वाले कई लोगों ने कहा, कि उम्र के हिसाब से प्रोग्राम के अलग अलग भाग बनाने की बहुत ज़रुरत है - उदाहरण के लिए, १० -१२ की उम्र की लड़कियों के लिए अलग पाठ्यक्रम और तरीकों का इस्तेमाल करना । फिर भी बहुत कम संस्थाएं हैं, जो वाकई ऐसा कर रही हैं ।

कभी कभी ये जान के किया जाता है- जैसे Girls' Puberty Book Projects/ गर्ल्स प्यूबर्टी बुक प्रोजेक्टस जो कोलंबिया यूनिवर्सिटी के साथ जुड़ा हैं । इस के अंतर्गत तंज़ानिया, घाना, इथियोपिया और कंबोडिया में, किशोर बनने के बारे में किताबें बांटी जाती हैं । इस प्रोजेक्ट में, ऐसी किताबों को ढूंढा जाता है जो उन देशों के हिसाब से डिज़ाइन करी गयीं हैं और उन्हीं देशों के सन्दर्भ में बनाई गयी हैं। ये किताबें बड़े स्पष्ट रूप से वी.वाई.ए. की अलग अलग उम्र की लड़कियों तक अपनी बात पहुंचाने की कोशिश करती हैं । क्यूंकि रजोधर्म की शुरुआत, अलग अलग लड़कियों के लिए, अलग उम्र में होती है । ये तो इस एक प्रोग्राम की बात है,पर और प्रोग्रामों के लिए भी, ऐसी सोच बहुत ज़रूरी है, जो पहचाने कि अलग अलग उम्र की वी.वाई.ए. लड़कियों में, समझने की शक्ति में फर्क होता है । उम्र के हिसाब से उनकी भावनाओं और समझ के विकास में फर्क होता है । इनको ध्यान में रखने से प्रोग्राम की सफलता बहुत बढ़ सकती है ।

वी.वाई.ए. लड़कियों में जो उम्र में थोड़ी बड़ी लड़कियाँ हैं, उनसे मिलना- बात कर पाना, अक्सर ज़्यादा आसान होता है। पर सच तो ये है, कि कम उम्र की लड़कियों को भी इस सहारे की ज़रुरत है । कार्यक्रम के बारे में जिन्होंने जवाब दिए, उनमें ऐसी कई लडकियां शामिल थीं । प्रोग्राम में हिस्सा लेने के दौरान उनकी उम्र १४ -१५ के बीच थी । उनका अब ये कहना था कि काश उनको प्यूबर्टी/किशोरावस्था/यौवन के बारे में पहले से जानकारी के साधन मिले होते।
कम उम्र की लड़कियों का भी, प्रोग्राम बनाने और रिसर्च, दोनों में ही मूल्यवान योगदान होता है ।

अगर अलग -अलग उम्र के हिसाब से प्रोग्राम की नीति को न बदला गया, तो प्रोग्राम के लिए, कम उम्र की वी.वाई.ए. लड़कियों के ये योगदान पाना, बहुत मुश्किल हो जाता है ।

एक लड़की का नज़रिया: " स्पोर्ट्स एक बढ़िया ज़रिया है, जिससे लड़कियों को उनके शरीर के बारे में सिखाया जा सकता है स्पोर्ट्स में शामिल होके, जेंडर के आधार पर हो रही हिंसा के बारे में बात करने से, अक्सर लड़कियाँ अपने शरीर को ले के और सहज हो जाती हैं, और उसके बारे में बात करने से नहीं झिझकती " - (भारत की एक किशोर लड़की)

इसमें तो कोई शक नहीं, कि वी.वाई.ए. की उम्र में बड़े जल्दी बदलाव आते रहते हैं । “एक १० साल की लड़की और एक १ ४ साल की लड़की में कुछ भी मिलता जुलता नहीं - उनकी जानकारी अलग है, रवैये , मानक , उनसे चाल चलन को लेके जो अपेक्षाएं की जाती हैं, उनके शरीर कैसे बदल रहे हैं, उनके रिश्ते, सब ही तो बिलकुल अलग है । उनकी समझ अलग है, एक जगह बैठ पाने की क्षमताएं तक अलग हैं,”, एक शोधकर्ता ने प्रोजेक्ट की टीम को ये बताया । ये भी कि, संस्थाएं अक्सर ये कहती हैं कि थोड़े बड़ी उम्र की वी.वाई.ए. लड़कियों के साथ काम करके अच्छे नतीजे मिलते हैं और छोटी लड़कियों का ध्यान बाँधना और मुश्किल होता है । “मुझे लगता है कि अब लोगों को ये समझ लेना चाहिए कि हम उन सबको एक ही दायरे में फिट करके काम नहीं कर सकते ।”

दोनों, लड़कों और लड़कियों को संगत में ला कर काम करने की बहुत मांग है । ऐसा करने के काफी अलग अलग तरीके हो सकते हैं । पर कुछ संस्थाएं अब भी ‘केवल लड़की’ पर अपना ध्यान केंद्रित करके प्रोग्रामिंग कर रही हैं । कई संस्थाएं पुरुषों को अपना सहयोगी बनाने की ज़रुरत महसूस कर रही हैं । वो लड़के- लड़कियों के लिए एक साथ, co-ed/को -एड प्रोग्राम बना रही हैं । या फिर ऐसे प्रोग्राम, जो लड़कियों और लड़कों, दोनों तक पहुँचते हैं, पर जो उन्हें अलग अलग रख कर काम करते हैं । मुश्किल ये है, कि इसपर कोई सहमति नहीं, कि ऐसा करने का सबसे असरदार तरीका कौन सा है । सच ये है कि काम करते समय, संस्थाएं बहुत सारे अलग अलग नज़रिये अपनाती हैं । प्रोग्राम हर तरह से को- एड होना चाहिए, या केवल लड़कियों के लिए होना चाहिए ? ये दो एकदम अलग नज़रिये हैं, जैसे दो छोर, पर इनके बीच बड़ी सारी अलग अलग संभावनाएं हैं । अक्सर प्रोग्राम इस बीच की जगह में कहीं पे फिट बैठते हैं ।

पुरुषों को सहयोगी बना कर उन्हें अपने काम से जोड़ना जेंडर/लिंग को लेके भेद भाव को बदलने का एक ज़रूरी तरीका है । पर वी.वाई.ए. लड़कों को प्रोग्राम में शामिल करने से ये डर रहता है, कि कहीं लड़कियों पर से फोकस हट न जाए या लड़कियों की आवाज़ें खो ना जाएँ । लड़के अक्सर चाहते हैं कि उन्हें शामिल किया जाए, पर इस पे अलग अलग संस्थाओं की अलग प्रक्रिया रहती है । कई को- एड प्रोग्राम बनाती हैं , या सामाजिक स्तर पर अपने विचारों का प्रचार करते समय लड़कों को अच्छे से शामिल करती हैं । कुछ संस्थाओं को लगता है कि जिस तरह लड़कियों को फोकस बनाकर प्रोग्राम बनाये जाते हैं, उस ही तरह, लड़कों को फोकस बना कर प्रोग्राम होने चाहिए । (पर ये संस्थाएं खुद ये पहल नहीं करना चाहतीं, क्यूंकि उनको डर है कि कहीं इससे लड़कियों पर से उनका ध्यान कम न हो जाए)।

हालांकि बड़ी सारी संस्थाएं ये मानती हैं कि लड़कों को साथ जोड़ना चाहिए, पर ये कोशिश सफल हो पाएगी, इस बात पर सबकी अलग अलग राय है । कई प्रोग्राम चलाने वालों को लगता है कि लड़कों के साथ जेंडर को लेकर मतभेद हटाने की बातचीत बहुत मुश्किल होती है । ये इसलिए हो सकता है कि लड़कों को अपने आप को ‘अत्याचारी’ के रूप में देखना और पहचानना पसंद नहीं । या फिर लड़के होने से जो बने बनाये ख़ास फायदे उन्हें मिलते हैं, वो उन्हें छोड़ने को तैयार नहीं । कुछ और संस्थाओं की सोच है कि लड़कों को संग जोड़के, उनमें सरल बदलाव लाये जा सकते हैं । लड़कों का बहनों की खुशहाली पे ध्यान देना, ज़रुरत आने पे उनकी तरफदारी करना, घर के कामों में हाथ बंटाना । इन संस्थाओं को लगता है, कि जेंडर के रोल में परिवर्तन लाने के लिए ये बहुत सफल और कारगर तरीके होते हैं ।

इस मुद्दे पर रिसर्च भी बहुत कम है, जिसकी मदद ली जा सके । जिन प्रोजेक्ट के बारे में हमनें जानकार लोगों से बात की, उनमें से ज़्यादातर का कहना है कि वी.वाई.ए. के साथ प्रोग्राम करते वक्त, किसी तरह से दोनों जेंडर को संगत में लाना, लाभदायक होता है । पर अगर इस संगती को अमल करने की बात की जाए तो मामला पेचीदा हो जाता है । इस पर बहुत कम सहमती है कि जेंडर

में बराबरी लाने की कोशिश में, दोनों जेंडर की ज़रूरतों को कैसे पूरा करा जाए । और तो और, खुद लड़कियाँ अक्सर इस मामले पर बिलकुल अलग अलग सोच रखती हैं। कुछ कहती हैं कि हाँ, लड़कों को शामिल करना ही चाहिए । कुछ और को- एड प्रोग्राम में लड़कों के साथ भाग लेने से या तो खुद परहेज़ करती हैं या फिर उनको मनाई है । इस सब को ध्यान में रखते हुए, हमारी सलाह है कि वी.वाई.ए. प्रोग्राम में हमेशा ‘केवल लड़कियों’ वाली जगह बनी रहनी चाहिए । साथ साथ, समय समय पर ऐसे सत्र भी आयोजित करने चाहिए जिनमें लड़के और लड़कियाँ साथ साथ कुछ सीख पाएं ।

लड़कों को शामिल करने पे लड़कियों की राय:

"को- एड, यानी लड़के लड़कियों को साथ में शामिल करने वाले सत्र बहुत ज़रूरी हैं, ताकि लड़के उन मुद्दों को समझ सकें, जिनसे लड़कियों को जूझना पड़ता है । अगर लड़कों को अलग और लड़कियों को अलग अलग ट्रेन किया जाए, तो ये कभी नहीं होगा ।"- किशोर लड़की, भारत ।

"मुझे लगता है कि अगर ये बातचीतें अलग अलग की जाएँ, तो बेहतर होगा । क्यूंकि कुछ ऐसी बातें हो सकती हैं जो
लड़कियाँ लड़कों के सामने शेयर नहीं करना चाहें । कुछ लड़कियों को अपने साथ के लड़कों या आदमियों के साथ खुल कर बात करना मुश्किल लगता है । मुझे लगता है कि अगर लड़कियों के मुद्दों पे खुल कर बातें करनी हैं, तो फिर लड़कियों के बीच ही करनी चाहिए "। किशोर लड़की, घाना

"लड़कों को नहीं, लड़कियों को सज़ा दी जाती है । ये सच्चाई शुरू में ही लड़कों और लड़कियों के साथ शेयर करनी चाहिए । लड़कों को समझना चाहिए कि उनके बर्ताव का लड़कियों की ज़िंदगी पे क्या असर होता है- कैसे उन्हें स्कूल से निकाल दिया जाता है, पीटा जाता है, उनकी इज़्ज़त पर सवाल उठाये जाते हैं "- किशोर लड़की, भारत

"अगर रजोधर्म या पीरियड्स को लेकर बातचीत हो रही है, तो साथ में होनी चाहिए, क्यूंकि ऐसे लड़के होंगे जिनकी छोटी बहनें हो सकती हैं, और फिर वो भी मदद कर सकते हैं ...
जैसे मेरे मेरी क्लास में, हम ५१ लोग हैं । उसमें केवल चार लडकियां हैं । बहुत बढ़िया क्लास है । एक बार, मैं क्लास में बैठी थी और जब उठी, तो मेरी जीन्ज़ पे दाग लग गया था । एक लड़के ने ये देखा और मुझे कहा कि मुझे जा कर कपड़े बदलने चाहिए । उसने मेरी मदद की, और मैंने अपने बस्ते से उस दाग को ढक दिया और इस तरह जा के कपड़े बदले । इसलिए अगर उन्हें जानकारी हो, तो लड़के बहुत मददगार हो सकते हैं ।"
किशोर लड़की, घाना

जान समझ के लड़किओं की सुरक्षा के लिए कदम उठाना, प्रोग्राम के सफल होने के लिए एकदम ज़रूरी है ।

सफल कार्यक्रम, अपनी देख रेख में शामिल लड़कियों की सुरक्षा सुनिश्चित करते हैं । इन संस्थाओं को प्रोग्राम सम्बन्धी रिसर्च करते वक्त नैतिक मानक भी अपनाने चाहिये । बच्चों की सुरक्षा को लेकर अधिकतर संस्थाओं की स्पष्ट नीतियाँ और कार्यप्रणाली होती हैं । वी. वाई.ए. लड़कियों की सुरक्षा के लिए ये एकदम ज़रूरी माना जाता है । अक्सर प्रोग्राम अपने आप से इस दिशा में कदम भी उठाते हैं, जैसे, अगर लड़कियों को, प्रोग्राम के बाहर, किसी हिंसा का सामना करना पड़ रहा है, तो उस हिंसा की जांच करना ; ज़रुरत के हिसाब से केस पर अलग से ध्यान देना, सही जगह पर उस केस को भेज कर आगे बढ़ाना, सहारा देना, सपोर्ट करना ; स्पष्ट रूप से, लड़कियों के लिए, खतरे को कम करने और सुरक्षा की योजना बनाने के लिए वर्कशॉप आयोजित करना; वी. वाई.ए. लड़की की बताई बात की गोपनीयता का हर हाल में आदर करना; उचित रूप से परिवारों, स्कूलों, पुलिस और स्थानीय न्याय की व्यवस्थाओंके साथ नाता बनाना; और जो वी.वाई.ए. लडकियां सफर कर रहीं हैं, उनकी सही देख रेख और निरिक्षण करना ।

छोटी संस्थाओं में से अब कई सारी, सुरक्षा और सिक्योरिटी को लेकर जेंडर का नज़रिया अपना रही हैं । BRAVE (ब्रेव) नामक संस्था अब मर्द कोचों के साथ काम नहीं करती । द गर्ल्स लिगेसी नामक संस्था, मर्दों को, ना कोच के लिए और ना ही ड्राइवर के लिए नौकरी पे लेती है । और उसके सारे कर्मचारी नियुक्ति से पहले समाज कल्याण मंत्रालय द्वारा स्क्रीन किये जाते हैं ।

काम पर रिपोर्ट करने के तरीके और बात आगे बढ़ाने के रस्ते ऐसे होने चाहिए जो लड़कियों के नज़रिये और हित से सच में सहानुभूति रखते हैं । वी.वाई.ए. लड़कियों की सुरक्षा के लिए ये बहुत ज़रूरी है। किसी परेशानी में सही विशेषज्ञ की तरफ बात बढ़ाना, और सलाहकार का होना- इन दोनों बातों को अक्सर प्रोग्राम का हिस्सा बनाया जाता है । खासकर तब, जब प्रोग्राम यौन उत्पीड़न या बाल शोषण से पीड़ित लड़कियों के साथ काम कर रहा हो । लेकिन इन प्रोग्रामों का ये भी तजुर्बा रहा है, कि कभी कभी, उत्पीड़न के मामलों में, परिवारों या स्कूलों से अनौपचारिक रूप से बात करने से, और असरदार हल मिल सकते हैं।

वी.वाई.ए. के गुटों के साथ काम करते समय, ये एकदम ज़रूरी है कि माता पिता और अविभावाकों को सूचित किया जाए और उनकी मंज़ूरी ली जाए, और लड़कियों को पूरी जानकारी मिले, जिसके आधार पर वो अपनी मंज़ूरी दें । कभी कभी संस्थाएं जब बड़ी वी.वाई.ए. लड़कियों के साथ काम करती हैं, उन्हें ये लगने लगता है कि उनके परिवारों से सम्बन्ध बनाना उतना ज़रूरी नहीं है । आखिर बड़ी लड़कियों को प्रोग्राम में आने के लिए परिवारवालों की मंज़ूरी की ज़रुरत नहीं होती। पर वी.वाई.ए. लड़कियों के साथ काम करते समय परिवार आदि से मंज़ूरी लेना ही बेहतर है । नहीं तो परिवारों और समाज दोनों ही अक्सर इसका विरोध करते हैं और काफी दिक्कतें पैदा करते हैं । कई प्रोग्राम ये काम स्कूल में जानकारी देने वाली वर्कशॉप का आयोजन करके करते हैं ।

भारत के एक प्रोग्रामर ने माता पिता की मंज़ूरी के इस मुद्दे पर बात की: “बड़ी लड़कियाँ अक्सर अपने माता पिता को बिना बताये आती हैं । यानी वो जोखिम उठा कर ऐसा करती हैं, और बाद में अपने माँ- बाप को ये बात बताती हैं । पर छोटी लड़कियां ऐसा नहीं कर सकतीं। छोटी लड़कियों (नाबालिगों) को भाग लेने के लिए हमें उनके माता-पिता की मंज़ूरी चाहिए ।

“प्रोग्रामर ये भी कहा कि लड़कियों के लिए, प्रोग्राम जहां हो रहा है, वहां तक पहुँचने में भी जोखिम हैं, क्यूंकि इस उम्र में अक्सर अपहरण हो जाते हैं । “दिल्ली में लड़कियों के अकेले इधर उधर जाने में डर भी एक अहम पहलू है ।”

अगर संस्थाएं वी.वाई.ए. के साथ किसी किस्म का रिसर्च करना चाह रही हैं, फिर तो मंज़ूरी पाने की और भी विस्तृत प्रक्रिया होनी चाहिए । ये बात तो साफ़ है, कि वी.वाई.ए. को साथ जोड़ कर किये गए रिसर्च के बहुत फायदे रहे हैं। जिन रिसर्चरस के साथ प्रोजेक्ट टीम ने बात की, उन्होंने कहा कि कुछ ऐसे केस होते हैं जहां

प्रोग्राम में भाग लेने के लिए वी.वाई.ए. लड़की के माँ बाप की मंज़ूरी काफी होती है । और वो मंज़ूरी छोटे मोटे रिसर्च में लड़कियों को शामिल करने पे भी लागू की जा सकती है । इन छोटे मोटे रिसर्च के उदाहरण - थोड़ा बहुत प्रोग्राम को आंकने या प्रोग्राम में लड़कियों को शामिल करने वाले हिस्सों को आंकने के लिए की जाने वाली रिसर्च । लेकिन सबका ये मानना था कि अगर और गहरी रिसर्च करनी हो, तो उसके लिए अलग से मंज़ूरी लेनी ही चाहिए ।

किस किस्म की रिसर्च की जा रही है, उसको ध्यान में रखते हुए, सन्दर्भ को ध्यान में रखते हुए, औपचारिक रूप से एक नैतिक कमिटी से मंज़ूरी पाने की ज़रुरत भी पड़ सकती है । कुछ रिसर्चर्स को यूं भी लगता है कि वास्तव में ये मंज़ूरी पाने का मसला इतना मुश्किल नहीं है जितना हमें लगता है - खासकर अगर आप उस रिसर्च का लक्ष्य माता पिता और अभिभावकों को साफ़ साफ़ समझा दें । इसका मतलब ये नहीं कि रिसर्चर लापरवाह हो जाए: सही तरीके से लड़कियों और उनके परिवारों को जानकारी देना एक सीरियस मामला है । ये एक बार का काम नहीं है , लड़कियों और उनके माता पिता को लगातार जानकारी देते रहना चाहिए ।

"रिसर्च की मंज़ूरी लेना एक बार का मामला नहीं, ये प्रक्रिया जारी रहती है" एक रिसर्चर ने हमें समझाया "मंज़ूरी सिर्फ शुरू शुरू में नहीं दी जाती ... इस पर लगातार समझौते होते रहते हैं "

ये प्रक्रिया कितनी भी जटिल क्यों न हो, पर लड़कियों को सहभागी बना के रिसर्च करने के बहुत स्पष्ट फायदे हैं । एक रिसर्चर, जो अक्सर इस किस्म की रिसर्च करती है, ने इस बात पर ज़ोर दिया कि वी.वाई.ए.लड़कियों को सहयोगी रिसर्चर वाली इज़्ज़त देने के बहुत फायदे हैं। “"ऐसे में, वी.वाई.ए. लडकियां अपनी रोज़ की एक्टिविटी से ही बहुत` सारा डेटा जमा कर लेती हैं " उन्होंने कहा " और फिर उस डेटा की विवेचना के लिए भी, हम उन्हें शामिल करते हैं, वापस उनके पास जाते हैं... उनसे उसपे बातचीत करने के लिए । मुझे लगता है ऐसा करना सही है । अगर वो शामिल हो कर, बड़ी मेहनत करके, उन सवालों वाले फॉर्म को भर रही हैं, तो हम उनके साथ ... जो मेन नतीजे निकलते हैं, साझा करते हैं। "

"और फिर उनसे और जानकारी मांगते हैं । कहते हैं, हमको ये समझ में आया- तुमको क्या लगता है ? तुम इस निष्कर्ष को पहचान पा रही हो? या- हम ये समझ नहीं पा रहे- तुम इसमें हमारी मदद कर सकते हो?"

" तो इस तरह से रिसर्च का और मटीरियल भी मिलता है । ये तरीका इन जवान लोगों के तौर तरीकों से मेल खाता है, और वो इसमें शामिल होके अपना योगदान देते हैं, अपने नज़रिये शेयर करते हैं, अपने आईडिया और जानकारी भी । उन्हें ऐसा करना बहुत अच्छा लगता है। एक्सपर्ट बनने में मज़ा आता है । "

स्थानीय और ग्लोबल स्तर पर हो रहे वी.वाई.ए. कोशिशें अगर आपस में गहरे सम्बन्ध बनाएं, तो वी.वाई.ए. लड़कियों के लिए हो रहे प्रोग्राम और रिसर्च, दोनों ही गतिशील होंगे ।

स्थानीय रूप से बहुत नयी किस्म की पहल की जाती हैं, पर ये प्रगतिशील तरीके विस्तृत रूप से, अन्य जगहों तक नहीं पहुँच पाते । ना ही उनपे कुछ लिखा जाता है । लोगों से जुड़ कर, स्थानीय तौर पे काम करने वाली संस्थाओं से हम बहुत कुछ सीख सकते हैं । उनके इस किस्म के पथ दर्शक काम को, ग्लोबल साउथ और नार्थ में भी साथियों द्वारा पहचाना और सराहा जाना चाहिए ।

प्रोजेक्ट की टीम को ये सुनने में आया कि असरदार वी.वाई.ए. प्रोग्राम लोकल ज़रूरतों को समझते हैं और उनको लेके संवेदनशील होते हैं । पर स्थानीय मुद्दों को लेके ये संवेदनशीलता बनाये रखना तब मुश्किल होने लगता है, जब वे बड़े पैमाने पर काम करने की कोशिश करते हैं । उन्हें दूर- दूर तक अपनी बात को असरदार तरीके से ले जाने में मुश्किल होती है । इसकी एक वजह तो फंडिंग या आयात की कमी है। इस बात से हमको ये भी पता चलता है कि ये असरदार लोकल प्रोग्राम की एक कश्मकश है । ऐसे प्रोग्राम की बुनियाद वो रिश्ते हैं, जो संस्था अपने लोकल समुदाय से बनाती है। यानी वो प्रोग्राम अपने लोगों की ख़ास ज़रूरतों को समझ पाते हैं और उनपे काम करते हैं । अब ऐसा प्रोग्राम बड़े पैमाने पे कैसे किया जा सकता है ? क्या ऐसा करना समझदारी भी होगी ?

बारबाडोस की एक प्रोग्रामर के लिए, उसकी संस्था की सफलता का सबसे बड़ा प्रमाण ये था कि उसके प्रोग्राम की मांग बढ़ने लगी । प्रोग्राम के हर नए दौर में नयी लड़कियाँ उसके प्रोग्राम में शामिल होने में अपनी रुचि दिखाने लगीं ।

इस मांग को पूरा करने के लिए, ये प्रोग्रामर अपनी लीडरशिप टीम बढ़ा रही है और अपने मानव संसाधन भी । “ अभी हम एक दूसरे के नज़दीक होके काम करते हैं, हमारे काम के बढ़ने के साथ ग्रुप की ये अंतरंगता कम नहीं होनी चाहिये ,” प्रोग्रामर बोलीं । “हम उन लड़कियों को इस काम के लिए ताकत दे रहे हैं और कुशल बना रहे हैं ,जो इस प्रोग्राम को करते हुए बड़ी हुई हैं । हम चाहते हैं कि वो लीडरशिप के रोल लें । जिन लड़कियाँ ने इस प्रोग्राम को सफलता से पूरा किया है, वो इस प्रोग्राम को चला सकती हैं ।”

“लड़कियाँ आगे बढ़ती हुई बहुत कुछ सीखती हैं, सीखने के नए मौकों के लिए तत्पर रहती हैं । एडजस्ट कर पाना, अपने में एक लचीलापन रखना- हम लीडरशिप में ये गुण ढूंढते हैं । हमारा तरीका यही है कि ‘ किसी एक तक पहुंचो, एक को पढ़ाओ ‘। ये तरीका हर लेवल पर काम आया है और इससे हमने अपनी संस्था में लीडरशिप को पनपने और बढ़ने के मौके दिए हैं ।”

इस उदाहरण से भी यही पता चलता है कि एक तरीका ये हो सकता है कि इस किस्म के प्रोग्राम शुरू किये जाएँ: पाथवे प्रोग्राम (यानी ऐसे प्रोग्राम जो आपको वो कुशलताएं दे देता है जो आपको उच्च शिक्षा में प्रवेश करने के लिए तैयार करे); साथ साथ हमउम्र लोगों में से ही लीडरशिप खोजना शुरू किया जाए । इस तरह, पूरे प्रोग्राम में सफलता से भाग लेने के बाद लड़कियाँ ही संस्था को और बढ़ाने, प्रभावी करने और लम्बे समय तक चलाने के लिए पहल लेंगी । लेकिन ये भी सच है कि अभी हमारे पास इस तरीके के असरदार होने का कोई प्रमाण नहीं है - इसलिए भी, क्योंकि छोटी, स्थानीय संस्थाओं में वो क्षमता और हुनर नहीं, जिनसे वो गहराई से रिसर्च कर पाएं । ऐसा रिसर्च जिससे पता चले कि प्रोग्राम की ये पहल कितनी प्रभावशाली है ।

बड़े NGO प्रोग्राम के असरदार तरीके से चलने या न चलने पर गहराई से रिसर्च करते हैं । स्थानीय संस्था बहुत निष्ठावान क्यों न हो, पर उसके पास ऐसी कुशलता नहीं होती, न ही ऐसे संसाधन होते हैं, जिनसे वो अपने चलाये प्रोग्राम के डेटा का विश्लेषण कर सके । सबसे सक्षम रिसर्च, बड़े, ग्लोबल संस्थाओं के प्रोग्राम के कई स्तर, और कई हिस्सों का विश्लेषण कर पाती है । इस किस्म की कोशिश में अक्सर दोनों तरह की रिसर्च की जाती है- गुणात्मक / क्वालिटेटिव रिसर्च के साथ साथ मात्रात्मक/क्वांटिटेटिव रिसर्च यानी संख्याओं के साथ काम करने वाली रिसर्च भी ।

पापुलेशन कौंसिल इस मामले में अनोखा है, कि इसने सांयोगिक -नियंत्रित जांच /randomised- controlled trials पर ज़ोर दिया है ; सेव द चिल्ड्रन, रुट्गरस नेथरलैंड, और इंस्टिट्यूट ऑफ़ रिप्रोडक्टिव हेल्थ, ये सब ही वी.वाई.ए.s को अपने साथ जोड़ के उन्नतशील रिसर्च कर रहे हैं ।

प्रोग्राम कैसे लागू किया जा रहा है, उसपर की जाने वाली रिसर्च के साथ -साथ अब बड़े पैमाने पे ग्लोबल स्टडीज़ हो रही हैं । उदाहरण, GEAS और GAGE रिसर्च इनिशिएटिव । ये सारा काम वी.वाई.ए. संबंधित हमारी जानकारी को बढ़ाने की दिशा में एक बढ़िया योगदान कर रहा है ।

यहां भी, इस बात पे रज़ामंदी होने लगी है कि प्रोग्राम तब प्रभावशाली होते हैं जब वो वी.वाई.ए. की सारी ज़रूरतों को एक दूसरे से जोड़कर, एक संपूर्ण रूप में देख पाते हैं और उस तरह से उन पे काम करते हैं । स्थानीय संस्थाएं ऐसी सोच का साकार रूप हैं । पर अक्सर वो अपने असर का सबूत नहीं दे पातीं । वो इसलिए कि उनके पास अक्सर वो हुनर और वो संसाधन नहीं होते, जिनसे वो अपने ही प्रोग्राम से मिले डेटा का विश्लेषण कर सकें ।

स्पॉटलाइट में संस्था : इंस्टिट्यूट ऑफ़ रिप्रोडक्टिव हेल्थ

जार्जटाउन यूनिवर्सिटी का इंस्टिट्यूट ऑफ़ रिप्रोडक्टिव हेल्थ, इस रिसर्च करने के लिए शुरू किया गया था कि लोगों में प्रजनन को ले के कितनी जागरूकता है । समय से के साथ, ये इंस्टिट्यूट, वी.वाई.ए. को यौवन के बदलाव और जेंडर मानदंडों के बारे में सिखाने के लिए डिज़ाइन किए गए कार्यक्रमों की प्रभावशीलता के मूल्यांकन/evaluation research में ज़्यादा ध्यान दे रहा है। इस काम में रिसर्च के अलग अलग तरीके इस्तेमाल होते हैं, जो लोगों को अपने साथ जोड़ते हैं । इन तरीकों में शामिल है : नृवंशविज्ञान /ethnography- मानव जाति विज्ञान संबंधी) और जीवन के इतिहास पे आधारित रिसर्च /life-history research ; हर वी.वाई.ए. की ज़िंदगी के ख़ास कोई के इंटरव्यू, और उस वी.वाई.ए. के बेस्ट फ्रेंड के इंटरव्यू । फिर तस्वीरों और बिना शब्दों के अन्य तरीकों का भी इस्तेमाल । और खेल के ज़रिये इस काम को करना । ये तरीके इस लिए उल्लेखनीय हैं, क्यूंकि वो वी.वाई.ए. के किशोरों को रिसर्च की प्रक्रिया में ज़बरदस्त तरीके से जोड़ पाते हैं ।

द गर्ल्स लिगेसी, आई एम अ गर्ल, FAT, NORSAAC, VANGO, और तीएम्पो द हुएगो जैसी ज़मीनी स्तर की संस्थाएं, आज की तारीख में एक बड़े पैमाने पे गुणात्मक और परिणात्मक, दोनों किस्म का डेटा जमा कर रहे हैं । (इससे ये देखने को मिलता है कि उनकी पहल से क्या और कितना फर्क पड़ा है ।)इसमें प्रोग्राम में भाग लेने वालों के बारे में , उनके शामिल होने से पहले और शामिल होने के बाद की जानकारी है । कई प्रोग्राम वी.वाई.ए. लड़कियों के बारे में एक लम्बे अरसे से डेटा जमा कर रहे हैं । अब उनके पास प्रोग्राम से मिली सीख का एक लम्बा खाता है । और ऐसे भी कुछ केस हैं, जहां जैसे- जैसे समय बीतता गया, हर स्टेज पे डेटा जमा किया गया । इसे लौंगिट्यूडनल डेटा/longitudinal data कहते हैं । ये अपने आप में एक मूल्यवान संसाधन है, जिसे अक्सर बड़े NGO जमा नहीं कर पाते, क्यूंकि वो लम्बे समय तक लड़कियों के साथ जुड़ नहीं पाते । जिस तरह अक्सर छोटे और स्थानीय संस्थान लम्बे अरसे तक वी.वाई.ए. लड़कियों से रिश्ते बना पाते हैं ।

कुछ ज़मीनी स्तर के प्रोग्राम, लड़कियों से जुड़े रहने के लिए नए किस्म के असरदार तरीके अपना रहे हैं । जैसे लड़कियों को डायरी लिखने के लिए प्रोत्साहित करना, और उनके विकास पर स्कोरकार्ड रखना, जिनसे वो फॉलो अप कर सकते हैं । पर जब इन संस्थाओं को अपने असरदार होने के बारे में बताने को कहा जाता है, तो वो अक्सर किस्से और कहानियां ही बता पाती हैं । उदाहरण के लिए , ब्रेव/BRAVE संस्था का कहना है कि वो समझ सकती है कि उसके काम का अच्छा असर हो रहा है, क्यूंकि लड़कियाँ संस्था में पहले से ज़्यादा समय बिताने लगी हैं । पर वो संस्था किसी औपचारिक तरीके से इस असर को समझा नहीं पाती ।

ज़िम्बाब्वे की एक प्रोग्रामर बताती हैं, कि लड़कियाँ कैसे प्रोग्राम में अपनी तरक्की का रिकॉर्ड डायरी में नोट करती हैं। लड़कियों को हर साल नई डायरी मिलती है । "हम हर साल उनसे कहते हैं कि अपनी सारी डायरी, पुरानी, नई, साथ में लेके आओ । जिससे लड़कियाँ अपने बदलाव को खुद देख पाती हैं " प्रोग्रामर बोली । "जिन्होंने तरक्की की है और अपनी तरक्की का सुबूत दिखा सकती हैं, हम उन्हें इनाम देते हैं । लड़कियाँ अपनी डायरी और स्कोर कार्ड कुछ यूं रखती हैं, जैसे वो उनके क्रेडिट कार्ड हों !" लड़कियों में बदलाव को आंकने के इस उन्नतशील तरीके के बावजूद पिछले कुछ सालों में इस संस्था को आर्थिक मुश्किलें आईं । क्योंकि उसे अतिरिक्त धन जुटा पाने के लिए इन परिणामों को प्रदर्शित कर पाने की ज़रुरत है ।

मेक्सिको की एक संस्था की दिक्कतें भी मिलती जुलती हैं। उसके एक प्रोग्रामर ने हमें उन गुणात्मक परिवर्तनों के बारे में बताया, जो संस्था से जुड़ी लड़कियों में समय के साथ दिखाई देते हैं। " पर हमें ज़्यादा व्यापक सिस्टम, और ऐसी क्षमता की ज़रुरत है, जिससे हम अपने प्रभाव को प्रदर्शित कर पाएं " उन्होंने कहा ।" हम देखते हैं कि लड़कियाँ कैसे आपस में मिलके, संग जुड़ के एक कारगर नेटवर्क बनाती हैं । ये लड़कियाँ संगठित हो रही हैं, गतिशीलता ला रही हैं , मिल कर काम कर रही हैं ...अब बस हमें और स्पष्ट मापदंड चाहियें जिनसे हम फंडिंग देने वालों को साफ़ साफ़ दिखा सकें, कि हमारे काम का ये असर हो रहा है।"

यानी यहां लगन की कोई कमी नहीं है, क्षमता न होने की परेशानी है । ये सारी संस्थाएं अपने जांच और मूल्यांकन करने के सिस्टम को और सक्षम बनाना चाहती हैं । और ये भी चाहती हैं कि वे, समय के साथ, अलग अलग स्तरों पे अपना प्रभाव साफ़ दिखा पाएं । स्थानीय स्तर के प्रयासों को स्थापित रिसर्च और फील्ड पे काम करने वालों की साझेदारियों से काफी हद तक फायदा हो सकता है) ।

रिसर्च और फील्ड पे काम करना- इन दोनों पहलू की साझेदारियों से डेटा के नए स्त्रोत खुलेंगे और स्थानीय रिसर्च के लिए नयी संभावनाएं सामने आएंगी । फंडर स्थानीय संस्थाओं की अंदरूनी जांच और मूल्यांकन के तरीकों को और बेहतर बना सकते हैं । वो इन्हें और विस्तृत रिसर्च समुदायों से जोड़ सकते हैं । ये सब करने के लिए फंड देने वालों को अपने संसाधनों को इस दिशा में लगाना होगा । (स्थानीय प्रोग्राम के प्रभाव को साफ़ बयान करने से इस एरिया में बहुत फायदे हो सकते हैं । लड़कियों को अपने से जोड़ने के लिए इन स्थानीय कार्यक्रमों के अनोखे, उन्नतशील और बहुमुखी तरीकों के प्रभाव के बारे में अगर सबको खबर दी जाए, तो इससे वी.वाई.ए. का ये कार्यक्षेत्र सार्थक तरीकों से आगे बढ़ सकता है । ऐसा करने से अगर दक्षिणी देशों के बीच या फिर उत्तर दक्षिण देशों के बीच सहयोग को बढ़ावा मिले , तो ये और भी सार्थक सिद्ध होगा । स्थानीय वी.वाई.ए. प्रोग्रामिंग के प्रभाव और क्षमताओं को दर्शाने से बहुत सारे बड़े -छोटे फायदे हो सकते हैं । इस तरह, इस प्रोग्रामिंग का प्रभाव बढ़ेगा । दूर -दूर तक इन प्रोग्राम का फायदा उठाया जा सकेगा ।

सारांश में

हमें वी.वाई.ए. लड़कियों के साथ आगामी और जारी, दोनों तरह की प्रोग्रामिंग से उम्मीद और प्रेरणा लेनी चाहिए। इस बात से, कि इतने सारे समझदार, बेहतरीन, लड़कियों द्वारा चालाये जाने वाले प्रोग्राम पहले से हैं। दुनिया भर के वी.वाई.ए. प्रोग्रामिंग क्षेत्र में बेहतर काम करने वालों में, स्थानीय, ज़मीन पे काम कर रही संस्थाएं सबसे आगे, रास्ता दिखाते हुए चल रही हैं। इतना बढ़िया काम, कि इनमें से कई ने इस क्षेत्र में दुनिया भर से इकठ्ठा किये गए सबूत और सीख को पीछे छोड़ दिया है। क्यूंकि ये किशोरावस्था के बदलावों से गुज़रती लड़कियों को सपोर्ट देना, उनकी सुरक्षा करना और उन्हें सबल बनाना बखूबी जानते हैं।

ये संस्थाएं हमें ये सीखा रही हैं कि लड़कियों को सक्रिय रूप से प्रोग्राम की श्रंखला के हर पहलू से जोड़ा जाना चाहिए और जोड़ा जा सकता है। फिर चाहे वो प्रोग्राम को डिज़ाइन करने का काम हो या उसे कारगर बनाना, या उसका मूल्यांकन करना या फिर उसको कहीं और दोहराना।

ज़मीनी स्तर पे काम करने वालों से हम बहुत कुछ सीख सकते हैं। ये सीख एक विशाल स्त्रोत है, जिसे अब तक इस्तेमाल ही नहीं किया गया है और जिससे दुनिया भर के उत्तरीय और दक्षिणी क्षेत्रों में, वी.वाई.ए. लड़कियों के साथ होने वाले काम को बहुत मदद मिल सकती है।

आगे बढ़ते हुए, प्रोजेक्ट टीम के सुझाव :

- ज़मीन पर काम करने वाली स्थानीय संस्थाओं को आर्थिक, सामाग्री सम्बंधित और तकनीकी साधन मिलने चाहियें, जो उन्हें अपने काम को बनाये रखने, उसका मूल्यांकन करने और उसके पैमाने को बढ़ाने के लिए चाहिए। ये एकदम ज़रूरी है कि उन्हें लम्बे समय तक, उनकी बदलती ज़रूरतों के हिसाब से, ये सहारा दिया जाए।
- दुनिया के उत्तरी और दक्षिणी क्षेत्रों के कार्यकर्ताओं को एक दूसरे के संपर्क में लाना चाहिये, हर क्षेत्र के अंदर भी कार्यकर्ताओं को एक दूसरे से जोड़ना चाहिये, ताकि इस काम से जुड़े लोगों का एक समुदाय बने, वो एक दूसरे से बातें, और अपने मसले शेयर कर पाएं और साथ परेशानियों के समाधान ढूंढें।
- रिसर्च और फील्ड में काम करने की साझेदारियां और बढ़ाई जाएँ, जिनसे, ज़मीनी स्तर पे काम करने वाली संस्थाए अपने प्रोग्राम आंकने की क्षमता को बढ़ा पाएं।
- ऐसे प्लेटफार्म बनाने चाहियें, जहां ज़मीनी स्तर पे काम करने वाली स्थानीय संस्थाएं अपने तजुर्बे और अपने हुनर को एक दूसरे से साझा कर पाएं। और लड़कियों के साथ प्रोग्रामिंग करने में जो समस्याएं बार बार आती हैं, उन्हें सुलझाने में एक दूसरे की मदद कर पाएं।
- वी.वाई.ए. लड़कियों के साथ हो रहे काम को और गतिशील बनाने के लिए, उसको सराहने और उसे और बड़े पैमाने पे ले जाने के लिए, वी.वाई.ए. लड़कियों के लिए और धन और साधन लगाने की कोशिश करनी चाहिए। जब कोई संस्था नए तरीकों से बढ़िया काम कर रही है, तो उसके उन प्रोग्रामों को और बढ़ावा देना चाहिए। और संस्थाओं की बदलती ज़रूरतों को ध्यान में रख के, लम्बे समय तक उसे अनुदान देने के फायदे दूसरों को दिखा पाने की कोशिश करनी होगी।

एनेक्स- इस काम में इस्तेमाल किये गए तरीके

वी.वाई.ए. (वी.वाई.ए.) गर्ल्स प्रोजेक्ट को, इन सब तरीकों से जानकारी हासिल कर के और जोड़ के, आकार मिला: लिखित सामग्री ध्यान से परखी गयी और कार्यक्रमों के बारे में समझ जमा की गयी; एम्पावर के अनुदेयी समूह का एक ऑनलाइन सर्वे हुआ ; जानकारी के मुख्य स्रोत, फील्ड में काम कर रहे कार्यकर्ताओं और शोधकर्ताओं, के साथ इंटरव्यू किये गए; लैटिन अमेरिकी कार्यक्रमों के कार्यकर्ताओं और भाग लेने वाली लड़कियों के साथ एक वर्कशॉप की गयी; और "गर्ल-इनसाइट" और फ़ोकस-ग्रुप द्वारा सीधे लड़कियों से उनकी बात सुनी और समझी गयी ।

लिखित सामग्री की समीक्षा। वी.वाई.ए. लड़कियों के लिए जो प्रोग्राम तैयार करे गए उनको समझने के लिए, प्रोजेक्ट टीम ने, जून से सितंबर २०१८ तक, लिखित सामग्री की व्यापक समीक्षा की। ये समीक्षा करने के लिए, टीम ने, JSTOR और ProQuest जैसे जानकारी सम्बन्धी अकादमिक डेटाबेस पे फोकस किया । साथ साथ फील्ड पे हो रहे काम के आधार पे बने डेटाबेस जैसे, नॉलेज फ़ॉर हेल्थ (K4 Health) प्रोजेक्ट में शामिल किये। इस काम के दौरान, १२३ ऐसे लेखों पे ध्यान केंद्रित किया गया जिनकी विशेषज्ञ द्वारा समीक्षा करके स्वीकृति दी गयी थी । उन्होंने ५० अन्य लेखों को ग्रे लिटरेचर के रूप में पहचाना (ग्रे लिटरेचर- यानी जो प्रकाशन और वितरण के सामान्य ज़रियों के बाहर उत्पादित हों)।

विशेषज्ञ द्वारा समीक्षा करके स्वीकृत(peer reviewed) लेखो में ये सब शामिल थे: जो प्रोग्राम चल रहे हैं, उनके अमल किये जाने पे एक बड़े स्तर पे की गयी रिसर्च की रिपोर्ट ; कई स्तर पे चलने वाले और कई भाग वाले कार्यक्रमों का आकलन; वी.वाई.ए. सम्बंधित, भागीदारी रिसर्च - जो प्रोग्राम वी.वाई.ए. रिसर्च में लड़कियों को जोड़ कर काम कर रहे हैं , उनको गहराई से परखना ; किशोरावस्था के बदलाव से जुड़ी चुनौतियों और अवसरों की जांच; और, स्वास्थ की सुरक्षा , जेंडर को लेकर सोच को बदलने , हिंसा को रोकने और शिक्षा को और असरदार बनाने के लिए जो ख़ास पहल की गयी है, उनकी जांच और मूल्यांकन ।

ग्रे लिटरेचर वाले मटीरियल में और भी विविधताहै । कुछ ऐसे लेख हैं जो वी.वाई.ए., लड़कियों को बेहतर संसाधन दिलाने के लिए पैसा लगाने, और लड़कियों को प्रोग्रामिंग में जोड़ने का बहुत ठोस आग्रह करते हैं । कुछ लेख चर्चा करते हैं, कि स्वस्थ रहने के लिए, स्कूल में सफल होने के लिए, खुद को सशक्त बनाने के लिए, या दूसरों के शिकार होने से बचने के लिए, वी.वाई.ए. लड़कियों की क्या आवश्यकताएँ होती हैं । कुछ और लेखों ने वर्तमान प्रोग्रामिंग का मूल्यांकन करके सबसे बेहतर तरीकों को सामने रखा है, इस बात का ख़ास ध्यान रखते हुए कि प्रोग्रामिंग प्रयासो में लड़कियों को कैसे शामिल किया जाए, पुरुष सहयोगियों को कैसे साथ में लिया जाये, या फिर लड़की-केंद्रित प्रोग्रामिंग के अन्य ख़ास पहलुओं को कैसे अपनाया जाये। यह सभी सामग्री केवल वी.वाई.ए. लड़कियों पे ही नहीं लागू होती, क्योंकि यह वी.वाई.ए. लड़कों, बड़ी उम्र की किशोर लड़कियों और सभी किशोरों से संबंधित है। और यहां ये भी कहना ज़रूरी है कि आगे चलकर हमारी टीम ने प्रोग्राम बनाने और चलाने के तरीकों में जो खूबसूरत विविधता देखी, उसको हम यहां पूरी तरह से कैप्चर ही नहीं कर पाए हैं ।

प्रोग्राम स्कैन। विशेषज्ञों द्वारा स्वीकृत(peer reviewed/ पीयर रिव्यूड) और अन्य रिपोर्ट (ग्रे लिटरेचर) को गहरे रूप से जांचने के साथ साथ, प्रोजेक्ट टीम ने, जून से सितंबर २०१८ में एक व्यापक प्रोग्राम स्कैन भी किया। इस स्कैन के दौरान, डेस्क रिसर्च और समीक्षा के अलावा, व्यक्तिगत प्रोफेशनल नेटवर्क के माध्यम से किये गए परामर्शों से, जानकारी इकठ्ठा करके, इस्तेमाल में लाई गयी । इस तरह, विश्व स्तर पर, ५० से अधिक वी.वाई.ए. (वी.वाई.ए.) कार्यक्रमों को चुना गया। ये कार्यक्रम हर क्षेत्र और उप-क्षेत्र में चलाये जा रहे हैं । इनमें से कुछ कई देशों में एक साथ चलाये जा रहे हैं, और कुछ और राष्ट्रीय या उप-राष्ट्रीय क्षेत्रों में केंद्रित हैं। प्रोग्राम स्कैन द्वारा ७० से अधिक उपकरणों और संसाधनों की भी पहचाना गया, जिनमें से कई, प्रोग्रामों को अमल करने से निकले हैं । इनमें से कई तरीके आसानी से उपलब्ध हैं और आगे होने वाली प्रोग्रामिंग के लिए भी सार्थक हो सकते हैं।

एम्पावर ग्राँटी पार्टनर्स का ऑनलाइन सर्वे (सर्वेक्षण)। एम्पावर(एमपॉवर) के वर्तमान ग्राँटी पार्टनर्स के, वी.वाई.ए. (वी.वाई.ए.) लड़कियों की विशिष्ट आबादी सम्बंधित काम के बारे में अधिक जानने के लिए , प्रोजेक्ट टीम ने सितंबर २०१८ में सक्रिय एम्पावर ग्राँटी पार्टनर्स के साथ एक ऑनलाइन सर्वेक्षण किया। यह सर्वेक्षण, सर्वे मॉन्की सॉफ्टवेयर(SurveyMonkey Software) को इस्तेमाल करके किया गया। अनुदेयी संगठन की ज़रुरत के मुताबिक, यह सर्वे या तो अंग्रेजी में था या स्पैनिश में। सर्वेक्षण में कुल ७१ संगठनों के जवाब मिले, जो सारे भाग लेने वाले ग्राँटी पार्टनर्स का ९३% हिस्सा था । भाग लेने वाले , लैटिन अमेरिका, अफ्रीका और पूर्व / दक्षिण पूर्व एशिया के साथ-साथ भारत, रूस और तुर्की से थे (नीचे चित्र ७ और ८ में आंकड़े देखें)। भाग लेने वालों में से कई उत्तरदाताओं को टीम के प्रमुख मुखबिरों की लिस्ट में जोड़ा गया।

चित्र ७ - एम्पावर ग्रांटी सर्वे: भाग लेने वालों की जानकारी

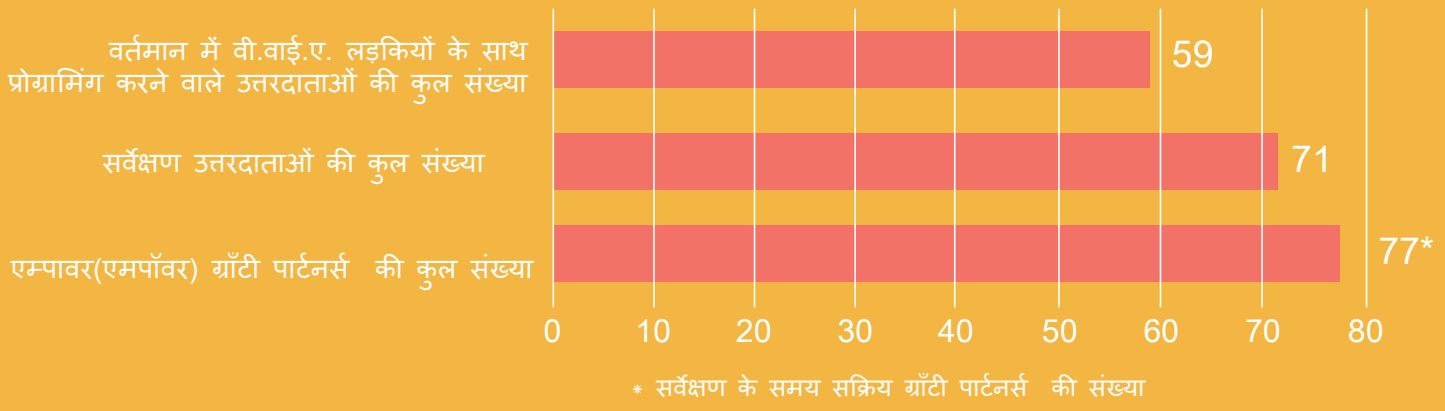

चित्र ८ - एम्पावर(एमपॉवर) ग्रांटी सर्वे: उत्तरदाताओं का भौगोलिक विभाजन

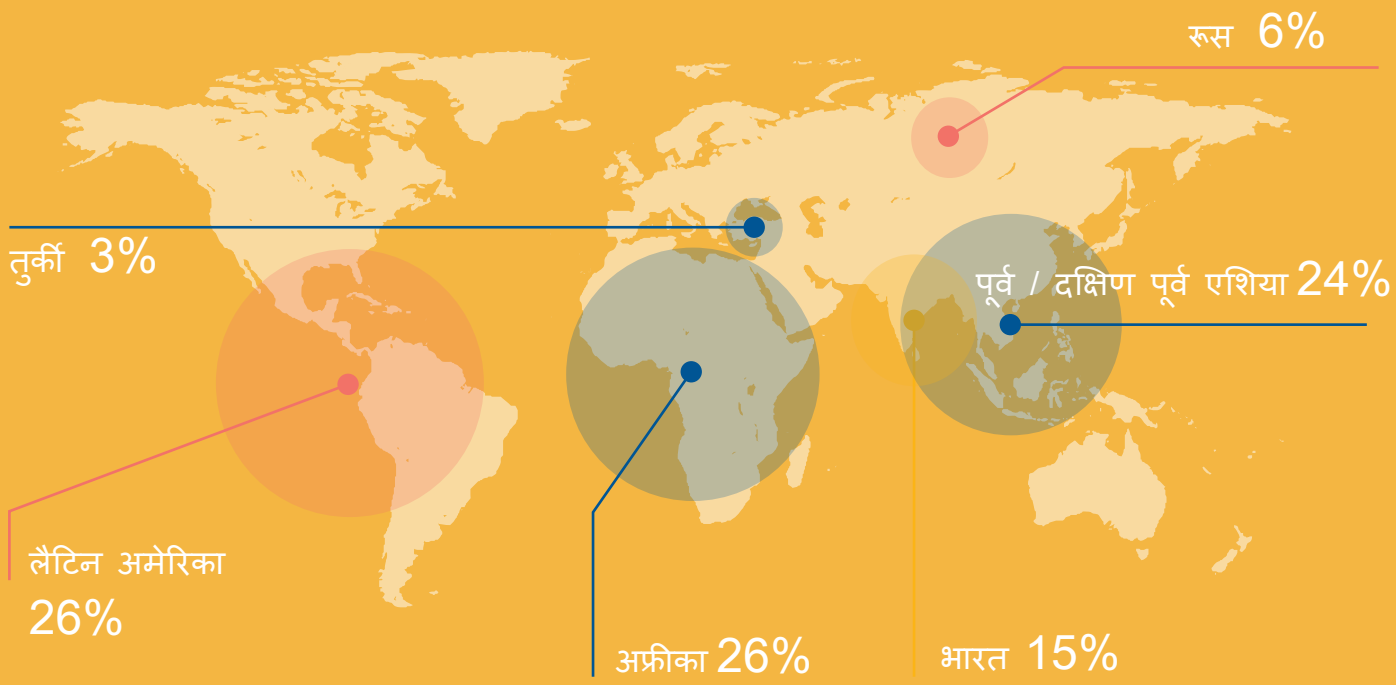

जानकारी का मुख्य स्रोत, कार्यकर्ताओं और शोधकर्ताओं, के साथ इंटरव्यू । वी.वाई.ए. से संबंधित विस्तृत प्रकाशित और अन्य (ग्रे लिटरेचर) साहित्य के बावजूद - एम्पावर ग्राँटी पार्टनर्स के सर्वेक्षण द्वारा स्थानीय प्रोग्रामिंग के नए दृष्टिकोणों के बारे में जागरूक होने के बावजूद - प्रोजेक्ट टीम को अभी और भी महत्वपूर्ण जानकारी इक्कट्ठा करना बाकी था । दुनिया भर के प्रोग्रामिंग लिटरेचर का कुछ ही हिस्सा वी.वाई.ए. लड़कियों पर केंद्रित होता है। और ग्रांटी सर्वे में, मुख्य रूप से, मात्रात्मक (क्वान्टिटेटिव) जानकारी ही मिल पाती है। इस लिए, वी.वाई.ए. लड़कियों के साथ काम करने वाले जानकार लोगों से, विषय सम्बंधित, गुणात्मक/ क्वालिटेटिव जानकारी जमा करना और उसको समझना, इस प्रोजेक्ट का अहम् हिस्सा बन गया । टीम ने क्षेत्र में काम और रिसर्च कर रहे कार्यकर्ताओं के साथ कुल २० इंटरव्यू किए। इन इंटरव्यू में से, दस एम्पावर के सक्रिय ग्राँटी पार्टनर्स के साथ थे, छह अन्य गैर सरकारी संगठनों के कार्यक्रम कर्ताओं के साथ थे, और चार ऐसे स्थापित रिसर्चर के साथ थे जिनका काम वी.वाई.ए. लड़कियों पर केंद्रित है। कार्यकर्ताओं और शोधकर्ताओं के साथ, चर्चा के लिए,अलग अलग तरीके अपनाये गए । इंटरव्यू स्काइप के माध्यम से, या तो अंग्रेजी या स्पेनिश में, संचालित किए गए थे, और बाद के उल्लेख और प्रतिलेखन के लिए, ये इंटरव्यू रिकॉर्ड भी किए गए ।

लैटिन अमेरिकी कार्यक्रमों के कार्यकर्ताओं की उपस्तिथि में उनके साथ कार्यशाला। ऊपर वर्णित डेटा स्रोतों की जानकारी साझा करने और परियोजना के अगले चरणों के बारे में सूचित करने के लिए, लैटिन अमेरिकी कार्यक्रमों के कार्यकर्ताओं और भाग लेने वाली लड़कियों के साथ, मार्च २०१९ में एक कार्यशाला आयोजित की गई थी। यह कार्यशाला मैक्सिको सिटी, मैक्सिको, में आयोजित की गई । इस में, अर्जेंटीना, ब्राजील, कोलम्बिया, मैक्सिको और पेरू से आये, एम्पावर(एमपॉवर) के आठ अनुदेयी संगठनों ने हिस्सा लिया। कार्यशाला में, इन भौगोलिक क्षेत्रों में किए जा रहे, विचारशील और उन्नत वी.वाई.ए. प्रोग्रामिंग पर गहराई से ध्यान दिया गया। साथ ही और डेटा स्रोतों से प्राप्त जानकारी को भी इस समझ के साथ मान्य (वेलिडेट) किया।

लड़कियों से डेटा (जानकारी)। लड़कियों से सीधे जानकारी इकट्ठा करने के प्रयास में, प्रोजेक्ट टीम ने, ज़मीनी स्तर पर चल रहे प्रोग्राम के साथ जुड़ कर, बारह "गर्ल -इनसाइट " प्रोग्राम करे। ये अभ्यास घाना, भारत, दक्षिण अफ्रीका और वियतनाम में हुए। साथ ही, मेक्सिको कार्यशाला के प्रतिभागी संगठनों से भी ये अभ्यास कराये गए। हर अभ्यास में, हर ग्रुप में, औसत देखा जाए तो, सात लड़कियाँ थीं। हर समूह में, १० से १४ वर्ष की, पाँच से ग्यारह लड़कियों को शामिल किया गया। इस एक्सर्साइज़ के डेटा में में आगे चलकर और डेटा जोड़ा गया- भारत और घाना में बड़ी उम्र की किशोरियों के साथ "एसेट बिल्डिंग" अभ्यास द्वारा (इस एक्सरसाइज में जनसंख्या परिषद से सामग्री को इस्तेमाल किया गया); भारत में एम्पावरकी लड़कियों की सलाहकार परिषद की, छह बड़ी किशोरियों के साथ प्रोग्रामिंग चर्चा द्वारा; और, भारत में सात वी.वाई.ए. और घाना में नौ बड़ी किशोरियों के साथ फोकस-ग्रुप चर्चा द्वारा।

प्रोजेक्ट के दौरान एकत्रित जानकारी और निष्कर्षों का एकीकृत संश्लेषण और विश्लेषण । प्रोजेक्ट टीम ने परियोजना के दौरान एकत्र की गई प्राथमिक जानकारी का विश्लेषण किया। यह करने के लिए टीम ने दीदूज़ (Dedoose), जो एक वेब से उपलब्ध सहयोगी सॉफ़्टवेयर है, और जो गुणात्मक और मिश्रित तरीकों से डेटा मैनेज और विश्लेषण करने की सुविधा देता है, उसका इस्तेमाल किया । इस विश्लेषण में पहला कदम था, एक व्यापक कोडबुक बनाना। ५५ कोड्स और १० मेन विषय बनाये गए । इससे डेटा को महत्वपूर्ण और उचित विषयों में बांटने में सुविधा हुई। दीदूज़ (Dedoose) का उपयोग करते समय, इंटरव्यू से जो जानकारी प्राप्त हुई थी, उसको इन कोड्स के हिसाब से अलग अलग केटेगरी में डाला गया। जब जानकारी की यह कोडिंग पूरी हो गई तब डेटा का, विषय के हिसाब से, विश्लेषण किया गया । इसकी शुरुआत यूं की गयी: दीदूज़ (Dedoose) ने कोड्स के सह-घटनाओं (co-occurrence) को पहचाना । डिस्क्रिप्टर डेटा- यानि विवरण करने वाले डेटा को-, कोड के हिसाब से क्वालिटेटिव डेटा के साथ, उचित समानताओं के लिए, सुनियोजित रूप से अलग अलग किया गया । डिस्क्रिप्टर डेटा में, सूचकों पर क्वांटिटेटिव जानकारी और हिस्सा लेने वाले संगठनों पर वर्णनात्मक जानकारी शामिल है ।

प्रोजेक्ट रिपोर्ट की सीमाएँ। वी.वाई.ए. गर्ल्स प्रोजेक्ट को, वी.वाई.ए. लड़कियों से संबंधित, सभी प्रोग्रामिंग या उन पर करे गए निवेश का नियमित अध्ययन करने के लिए नहीं डिज़ाइन किया गया था। प्रोजेक्ट टीम ने जो लिखित सामग्री की समीक्षा और प्रोग्राम स्कैन किये, वो व्यापक तो थे पर उन्हें संपूर्ण नहीं कहा जा सकता। कार्यकर्ताओं और शोधकर्ताओं (रिसर्चर्) की टीम ने इस परियोजना के दौरान जो इंटरव्यू लिए, वे जानकारी देने वालों सूचकों के समूह, आयु, लिंग, पहचान, या भौगोलिक क्षेत्र के हिसाब से संतुलित या हर रूप से पूर्ण नहीं थे। इस रिसर्च ने, प्रोजेक्ट टीम को, सबसे ज़रूरी कुछ विचारों और प्रश्नों को, १० से १४ साल की लड़कियों के साथ काम कर रहे कार्यकर्ताओं और शोधकर्ताओं (रिसर्चर्) के एक सैंपल ग्रुप (नमूने के तौर पर एक समूह) के बीच जांचने और समझने का मौका दिया। इस लिए, ये निष्कर्ष, इस क्षेत्र में काम की स्थिति की एक झलकी दिखाता है। ये ऐसे परिणाम नहीं हैं, जिनके आधार पे आप एक नयी और स्पष्ट धारणा बना सकें। तब भी, जानकारी की इस झलक से हमें पता चलता है कि, वी.वाई.ए. प्रोग्रामिंग का एक विशाल ब्रह्मांड है जो कि जिसे विश्व भर में लिखे जाने वाले वी.वाई.ए. (वीएआई) संबंधित लेखों और अन्य साहित्य ने अब तक अनदेखा किया है।

एनेक्स - चुने हुए संदर्भ

चंद्रा-मौली, इत्यादि 2017 . “इम्प्लिकेशन्स ऑफ़ दा ग्लोबल अर्ली ऐडोलेसन्ट स्टडीस फोर्मातिव रिसर्च फाइंडिंग फॉर एक्शन एंड फॉर रिसर्च,” जर्नल ऑफ़ एडोल्सेंट हेल्थ, 61

चांट, कलेट-देवीएस, एंड रामलहो - चैलेंजेस एंड पोटेंशियल सोल्यूशन्स फॉर ऐडोलेसन्ट गर्ल्स इन अर्बन सेटिंग्स : अ रैपिड एविडेंस रिव्यु - द जेंडर एंड ऐडोलेसन्स: ग्लोबल एविडेंस (GAGE) द्वारा प्रकाशित रिसर्च इनिशिएटिव

हैबरलैंड, इत्यादि २०१८. “अ सिस्टेमेटिक रिव्यु ऑफ़ ऐडोलेसन्ट गर्ल प्रोग्राम इम्प्लीमेंटेशन इन लो एंड मिडिल-इनकम कंट्रीज: एविडेंस गैप्स एंड इन्साइटस,” जर्नल ऑफ़ ऐडोलेसन्ट हेल्थ, 63

लुंडग्रेन, इत्यादि 2013, “हूज़ टर्न टू डु द डिशेज़ ? ट्रांसफॉर्मिंग जेंडर ऐटिट्यूडस एंड बिहेवियर्स अमंग वैरी यंग ऐडोलेसन्टस इन नेपाल,” जेंडर एंड डेवलपमेंट,21 : 1

पॉपुलेशन काउन्सल (जनसंख्या परिषद), ‘इन्वेस्टिंग व्हेन इट काउंट्स : रिव्युइंग दा एविडेंस एंड चार्टिंग अ कोर्स ऑफ़ रिसर्च एंड एक्शन फ़ोर वैरी यंग ऐडोलेसन्टस’, 2016 में प्रकाशित

सेव द चिल्ड्रन, ‘वैरी यंग ऐडोलेसन्ट सेक्सशूअल एंड रीप्रोडक्टिव हेल्थ एंड जेंडर प्रोग्राम डिज़ाइन गाइड’, 2019 में प्रकाशित

श्लेक्ट, इत्यादि 2017. “प्रायोरीटाइज़िंग प्रोग्रामिंग टू अड्रेस द नीड्स एंड रिस्क्स ऑफ़ वैरी यंग ऐडोलेसन्टस : अ समरी ऑफ़ फाइनडिंग्स अक्रॉस थ्री हूमैनिटेरियन सेटिंग्स,” कॉन्फ्लिक्ट एंड हेल्थ , 11 (सप्ल 1): 31

सोमेर, मर्नी 2011. “ऐन अर्ली विन्डो ऑफ़ ओप्पोरचुनिटी फॉर प्रमोटिंग गर्ल्स हेल्थ: पॉलिसी इम्प्लिकेशन्स ऑफ़ द गर्ल्स प्यूबर्टी बुक प्रोजेक्ट इन तंज़ानिया ,” इन्टर्नैशनल इलेक्ट्रानिक जर्नल ऑफ़ हेल्थ एजुकेशन, 14

USAID और इंस्टीट्यूट फॉर रीप्रोडक्टिव हेल्थ, रीचिंग वैरी यंग ऐडोलेसन्टस (VYAs): , एडवांसिंग प्रोग्राम, रिसर्च एंड इवैल्यूऐशन प्रैक्टिसेज, 2010 में जारी कार्यक्रम

वूग एंड केग्स्टन, द सेक्शुअल एंड रीप्रोडक्टिव हेल्थ नीड्स ऑफ वैरी यंग ऐडोलेसन्टस ऐज्ड 10-14 इन डिवेलपिंग कन्ट्रीज: व्हाट डस द एविडेंस शो, रिलीज़ड बाई गुत्तमाशर इंस्टिट्यूट, 2017 में

EMpower